जैनधर्म

मुख्यतत्त्वचिन्तामणि

लेखक

श्री श्री श्री १००८ श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्रीकाशीरामजी
महाराज के सुशिष्य प्रसिद्धवक्ता श्रीशुक्लचन्द्रजी
महाराज

प्रकाशक

श्रीलाला नरातामल जी के सुपुत्र
लाला वासुदेव बनारसीदास ओसवाल जैन
अम्बाला, शहर

प्रथमावृत्ति] विक्रमी सं० १९९४ [मूल्य ॥-)

नोट—इस पुस्तक का मूल्य धर्मकार्य में ही लगाया जायगा।

Printed by
K R Jain at the Manohar Electric Press
Said Mitha Bazar, Lahore

प्राक्कथन

ससार मे प्रत्येक प्राणीको यह जानना अति आवश्यक है कि मैं क्या हू, मेरी दु खित सुखित अवस्थाका क्या कारण है, जिस वस्तुका आज सयोग है उसीका कल वियोग होता है इसका प्रधान कारण क्या है, जीव किसे कहते हैं, अजीव क्या वस्तु है, पुण्य पाप के कितने भेद हैं धर्म के नियम कितने हैं, आदि तत्वों के मर्मको जानकर उन नियमो का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है यह न्याय सर्वमान्य है मानो इसी लिए तीर्थकर भगवान् महावीर प्रभुने मूलशास्त्र दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन की ११ वीं गाथा में कहा है—

जो जीवेवीनयाणई अजीवेवीनयाणई।
जीवाजीवे आयाणतो कह सो नाहीए सजम ॥

अर्थात् जो प्राणी जीव अजीव तत्वों को नहीं जानता है वह साधु धर्म या गृहस्थ धर्मादि का पालन नहीं कर सकता है। ससार के दु खों से छूटने का उपाय राग द्वेष मोह का त्याग करते हुए साधु या श्रावक के चारित्र का पालन करना जरूरी है। स्वतन्त्र का मार्ग रत्नत्रय है। अर्थात् सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र इन्हीं में दत्तचित्त होकर शुद्धात्मा का ध्यान करने से सर्व कर्म कट जाते हैं और यह आत्मा शुद्ध सिद्धनिर्वाण पद का अधिकारी हो जाता है। निर्वाण के मार्ग को

जानने के लिए इस अपूर्व ग्रथ का मनन करना जरूरी है। पहले भी इसमें से पचीस बोल का थोकड़ा, नवतत्त्व, छब्बीस द्वार का थोकड़ा यह ग्रथ प्राचीन अर्वाचीन मुनिराजों ने छपवाए है। उनके पृथक् पृथक् होने के कारण व आधुनिक स्पष्ट हिन्दी भाषा मे प्रचलित न होने के कारण विद्यार्थियों को बहुत असुविधा मालूम होती थी। उस कठिनाई को ध्यान में रखकर इस ग्रथ में पचीस बोल का थोकड़ा,नवतत्त्व, छब्बीस द्वार, देवलोक का छब्बीस द्वार, गुण स्थानों का वर्णन, जैन धर्म के दस नियम आदि ऐसा विस्तार किया है कि जिससे छात्रों को व स्वाध्याय करने वालों को विशेष ज्ञान प्राप्त हो और बहुत कठिन विषय भी सामने न आवे जिससे साधारण बुद्धि वालों का मन न घबराए और धर्म का मर्म समझ सकें। इस ग्रथ का पूर्णतया सशोधन न हो सकने के कारण बहुत सी त्रुटिया भी रही होंगी, उन्हें पाठक स्वय सुधार कर पढ़ेंगे।

आत्मोन्नति इच्छुक

जैनमुनि शुक्लचन्द्र

समर्पण

अपने पूज्य पतिदेव

स्वर्गीय लाला नरातामल जी जैन

की

पुण्य स्मृति में सादर भेंट !

कृपी देवी जैन

पच्चीस बोल का थोकड़ा

पच्चीस बोल का थोकड़ा

१. गति–चार

१. नरक गति २ तिर्यञ्च गति ३ मनुष्य गति ४ देव गति ।

२. जाति–पांच

१ एकेन्द्रिय जाति २ द्वीन्द्रिय जाति ३ त्रीन्द्रिय जाति ४ चतुरिन्द्रिय जाति ५ पचेन्द्रिय जाति ।

३. काय–षट्

१ पृथिवीकाय २ अप्काय ३ तेजोकाय ४ वायुकाय ५ वनस्पति काय ६ और त्रसकाय ।

४. इन्द्रिय–पाच

१ श्रुतेन्द्रिय २ चक्षुरिन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ रसेन्द्रिय ५ स्पर्शेन्द्रिय ।

५. पर्याप्त–षट्

१ आहार पर्याप्त २ शरीर पर्याप्त ३ इन्द्रिय पर्याप्त ४ श्वासोश्वास पर्याप्त ५ भाषा पर्याप्त ६ मन.पर्याप्त ।

६. प्राण–दश

१ श्रुतेन्द्रिय बलप्राण २ चक्षुरिन्द्रिय बलप्राण ३ घ्राणेन्द्रियबलप्राण ४ रसेन्द्रिय बलप्राण ५ स्पर्शेन्द्रिय बल-

प्राण ६ मनः बलप्राण ७ वचन बलप्राण ८ काय बलप्राण ९ श्वासोश्वास बलप्राण १० आयुष्कर्म बलप्राण ।

७. तनु अर्थात् शरीर–पाच

१ औदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तेजस शरीर ५ कार्मण शरीर ।

८ योग–पंचदश

(४ मन के) १ सत्यमनोयोग २ असत्य मनोयोग ३. मिश्रित मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग (४ वचन के) १ सत्य वचन २ असत्य वचन ३. मिश्रित वचन ४. व्यवहार वचन (७ काय के) १ औदारिक काययोग २ औदारिक मिश्रकाय योग ३ वैक्रिय काय योग ४ वैक्रिय मिश्रकाय योग ५ आहारिक काय योग ६ आहारिक मिश्र काय योग ७ कार्मण काय योग ।

९. उपयोग–द्वादश

(५ ज्ञान) १ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ अवधि ज्ञान ४ मन.पर्यव ज्ञान ५ केवल ज्ञान (३ अज्ञान) १ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ विभंग ज्ञान (४ दर्शन) १ चक्षुर्दर्शन २ अचक्षुर्दर्शन ३ अवधि दर्शन ४. केवल दर्शन।

१०. कर्म–आठ

१ ज्ञानावरणीय कर्म २ दर्शनावरणीय कर्म ३ वेद-नीय कर्म ४ मोहनीय कर्म ५ आयुष्कर्म ६ नामकर्म ७ गोत्र कर्म ८ अन्तराय कर्म ।

११. गुणस्थान—चतुर्दश

१ मिथ्यात्व गुणस्थान २ सास्वादन गुणस्थान ३ मिश्र गुणस्थान ४ अव्रति सम्यग् दृष्टि गुणस्थान ५ देश विरति गुणस्थान ६ प्रमादी संयति गुणस्थान ७ अप्रमादी संयति गुणस्थान ८ नियट्टि (निवर्त्ति) बादर गुणस्थान ९ अनियट्टि (अनिवर्त्ति) बादर गुणस्थान १० सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान ११ उपशान्तमोहनीय गुणस्थान १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान १३ सयोगी केवली गुणस्थान १४ अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ पांच इन्द्रियों के विषय—तेईस

(श्रुतेन्द्रिय के विषय ३) १ जीव शब्द २ अजीव शब्द ३ मिश्र शब्द (चक्षुरिन्द्रिय के विषय ५) १ कृष्ण २ नील ३ पीत ४ रक्त ५ श्वेत (घ्राणेन्द्रिय के विषय २) १ सुगन्ध २ दुर्गन्ध (रसेन्द्रिय के विषय ५) १ कटुक २ कषाय ३ खट्टा ४ मृदु (मीठा) ५ तीक्ष्ण (स्पर्शेन्द्रिय के विषय ८) १ कर्कश २ सकोमल ३ लघु ४ गुरु ५ उष्ण ६ शीत ७ रूक्ष ८ स्निग्ध।

१३. मिथ्यात्व के भेद—दश

१ जीव को अजीव कहे तो मिथ्यात्व २ अजीव को जीव कहे तो मिथ्यात्व ३ धर्म को अधर्म कहे तो मिथ्यात्व ४ अधर्म को धर्म कहे तो मिथ्यात्व ५ साधु को असाधु कहे तो मिथ्यात्व ६ असाधु को साधु कहे तो मिथ्यात्व

७ मोक्ष के मार्ग को ससार का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ८ ससार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग कहे तो मिथ्यात्व ९ कर्म रहित को कर्म सहित कहे तो मिथ्यात्व १० कर्म सहित को कर्म रहित कहे तो मिथ्यात्व ।

१४. तत्त्व—नौ

१ जीव तत्त्व २ अजीव तत्त्व ३ पुण्य तत्त्व ४. पाप तत्त्व ५ आश्रव तत्त्व ६. सवर तत्त्व ७ निर्जरा तत्त्व ८ बन्ध तत्त्व ९ मोक्ष तत्त्व ।

लघु नव तत्त्व के ११५ भेद

प्रथम जीव तत्त्व के १४ भेद–(एकेन्द्रिय के ४ भेद) १ सूक्ष्म २ बादर ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त (द्वीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (त्रीन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (चतुरिन्द्रिय के २ भेद) १ पर्याप्त २ अपर्याप्त (पञ्चेन्द्रिय के ४ भेद) १ सन्नि पञ्चेन्द्रिय २ असन्नि (असज्ञि) पञ्चेन्द्रिय ३ पर्याप्त ४ अपर्याप्त ।

दूसरे अजीव तत्त्व के १४ भेद–(धर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (अधर्मास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (आकाशास्तिकाय के ३ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश (काल का एक ही भेद) एक काल द्रव्य एव १० (पुद्गल द्रव्य के ४ भेद) १ स्कन्ध २ देश ३ प्रदेश ४ परमाणु पुद्गल ।

तृतीय ण्य तत्त्व के ९ भेद–१ अन्न पुण्य २ (पान)

पाणी पुण्य ३ लयण पुण्य ४ शयन पुण्य ५ वस्त्र पुण्य ६ मन पुण्य ७ वचन पुण्य ८ काय पुण्य ९ नमस्कार पुण्य (नम्रता)।

चतुर्थ पाप तत्त्व के १८ भेद—१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८. माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह (क्लेश) १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ माया मृषा १८ मिथ्या दर्शन शल्य।

पाचवें आश्रव तत्त्व के २० भेद—१ मिथ्यात्वाश्रव २ अव्रताश्रव ३ प्रमादाश्रव ४ कषायाश्रव ५ योगाश्रव ६ प्राणातिपाताश्रव ७ मृषावादाश्रव ८ अदत्तादानाश्रव ९ मैथुनाश्रव १० परिग्रहाश्रव ११ श्रुतेन्द्रियाश्रव १२ चक्षुरिन्द्रियाश्रव १३ घ्राणेन्द्रियाश्रव १४ रसनेन्द्रियाश्रव १५ स्पर्शेन्द्रियाश्रव (यह पाच इन्द्रिय वश न करने से आश्रव होते हैं।) १६ मनोयोगाश्रव १७ वचनयोगाश्रव १८ काययोगाश्रव १९ भाण्डोपकरण वस्त्र पात्र अयत्ना से ग्रहण करे, अयत्ना से रक्खे तो आश्रव २० सूची कुशाग्रमात्र भी पदार्थ अयत्ना से लेवे तथा देवे तो आश्रव।

छठे सवर तत्त्व के २० भेद—१ सम्यक्त्व सवर २ व्रत सवर ३ अप्रमाद सवर ४ अकषाय सवर ५ अयोग सवर ६ प्राणातिपात विरमण सवर ७ मृषावाद विरमण सवर ८ अदत्तादान विरमण सवर ९ मैथुन विर-

गण संवर १०. परिग्रह विरमण संवर ११–१५ पाचों इन्द्रिय वश करे तो संवर १६ मन वश करे तो संवर १७ वचन वश करे तो संवर १८ काय वश करे तो संवर १९ भाण्डोपकरण यत्न से लेवे तथा देवे, रक्खे तो संवर २० सूची कुशाग्र मात्र भी पदार्थ यत्न से लेवे तथा देवे तो संवर।

सातवें निर्जरा तत्त्व के १२ भेद–१. अनशन तप २ ऊनोदरी तप ३ भिक्षाचरी तप ४ रस परित्याग तप ५. कायक्लेप तप ६ प्रतिसलीनता तप ७ प्रायश्चित्त तप ८. विनय तप ९ वैयावृत्य (वेयावच्च) तप १० स्वाध्याय तप ११ ध्यान तप १२ कायोत्सर्ग तप।

आठवें बन्धतत्त्व के ४ भेद–१ प्रकृतिबन्ध २ स्थितिबन्ध ३ अनुभाग बन्ध ४ प्रदेश बन्ध।

नवमें मोक्ष तत्त्व के ४ भेद–१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ तप।

इसी प्रकार छोटी (लघु) नवतत्त्व के ११५ भेद।

१५. आत्मा–आठ

१ द्रव्यात्मा २ कषायात्मा ३ योगात्मा ४ उपयोगात्मा ५ ज्ञानात्मा ६ दर्शनात्मा ७ चारित्रात्मा ८ बलवीर्यात्मा।

१६. दण्डक–चौवीस

१ दश भवनपति देवों के १० दण्डक ११ सात नारकियों का एक दण्डक १२–१६ पाच स्थावरों के पाच दण्डक

१७–१९ तीनों विकलेन्द्रियों के ३ दण्डक २० पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचों का एक दण्डक २१ मनुष्य का एक दण्डक २२ व्यन्तर देवों का एक दण्डक २३ ज्योतिषी देवों का एक दण्डक २४ वैमानिक देवों का एक दण्डक।

१७. लेश्याएं–षट्

१ कृष्ण लेश्या २ नील लेश्या ३ कापोत लेश्या ४ तेजो लेश्या ५. पद्म लेश्या ६ शुक्ल लेश्या।

१८. दृष्टि–तीन

१ सम्यग् दृष्टि २ मिथ्या दृष्टि ३ मिश्र दृष्टि।

१९. ध्यान–चार

१ आर्त्त ध्यान २ रौद्र ध्यान ३ धर्म ध्यान ४ शुक्ल ध्यान।

२०. द्रव्य—छः

१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल द्रव्य।

षट् द्रव्यों के तीस भेद

(धर्मास्तिकाय के पांच भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से गति लक्षण, चलन गुण सहाय।

(अधर्मास्तिकाय के ५ भेद) १ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से स्थिर गुण सहाय (स्थिति लक्षण)।

आकाशास्तिकाय के ५ भेद—१ द्रव्य से एक २ क्षेत्र से लोकालोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से आकाश को अवकाश देने का स्वभाव।

काल के ५ भेद—१ द्रव्य से अनन्त २ क्षेत्र से अढाई द्वीप प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूप ५ गुण से वर्त्तना लक्षण।

जीवास्तिकाय के ५ भेद—१ द्रव्य से जीव द्रव्य अनन्त २ क्षेत्र से चतुर्दश रज्जु प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से अरूपी ५ गुण से चेतना लक्षण।

पुद्गलास्तिकाय के ५ भेद—१ द्रव्य से अनन्त २ क्षेत्र से लोक प्रमाण ३ काल से अनादि अनन्त ४ भाव से रूपी ५ गुण से सडना, पडना, मिलना, गलना, विध्वसन होना ही लक्षण है।

२१. राशि—दो

१ जीव राशि २ अजीव राशि।

२२. श्रावक के बारह व्रत

१ निरपराधी स्थूल जीव हिंसा का त्याग करे २ स्थूल मृषावाद का त्याग करे ३ स्थूल अदत्तादान का त्याग करे ४ स्वदारा सन्तोष व्रत को धारण करके वेश्या, परस्त्री आदि का त्याग करे ५ परिग्रह का परिमाण करे यह पाच ही व्रत यदि गृहस्थी सर्वथा प्रकार से धारण न कर सकता हो तो यथाशक्ति प्रमाणपूर्वक धारण करे ६

षट्दिशाओं में गमन करने का प्रमाण करे ७ षट्विंशति बोल वा पचदश कर्मादानों का त्याग करे ८ अनर्थादण्ड का त्याग करे ९ काल के काल सामायिक करे १० संवर करे ११ पर्व में पोषधोपवास करे १२ मुनि महाराज को निर्दोष आहार देवे, अतिथि संविभाग करे।

२३. साधु के पांच महाव्रत

(प्रथम महाव्रत) १ प्राणातिपात, जीवहिंसा करे नहीं। २ करावे नहीं। ३ करते की अनुमोदना करे नहीं। मन, वचन और काया से। (द्वितीय महाव्रत) १ मृषावाद, असत्य बोले नहीं २ बोलावे नहीं ३ बोलते की अनुमोदना करे नहीं। मन, वचन और काय से। (तृतीय महाव्रत) १ अदत्तादान, चोरी करे नहीं। २ करावे नहीं ३ करते की अनुमोदना करे नहीं। मन, वचन और काय से। (चतुर्थ महाव्रत) १ मैथुन, कुशील सेवे नहीं। २ सेवावे नहीं ३ आसेवन करते की अनुमोदना करे नहीं। मन, वचन और काया से। (पञ्चम महाव्रत) १ परिग्रह, धन आदि रखे नहीं, २ रखावे नहीं, ३ रखते की अनुमोदना करे नहीं। मन, वचन और काया से।

२४. भंग–४९

१—अंक एक ११ (ग्यारह) का—भाङ्गे ९ १ (एक) करण १ (एक) योग से कहना। जैसे कि —

१ करू नहीं मनसा २ करू नहीं वयसा ३ करू नहीं

कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा ५ कराऊ नहीं वयसा ६. कराऊ नहीं कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा ८ अनुमोदू नहीं वयसा ९ अनुमोदू नहीं कायसा।

२—अक एक १२ (बारह) का–भाङ्गे ९। १ करण २ योग से कहना।

१ करू नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं वयसा कायसा ४ कराऊ नहीं मनसा वयसा ५ कराऊ नही मनसा कायसा ६ कराऊ नहीं वयसा कायसा ७ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ९ अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

३—अङ्क एक १३ का–भाङ्गे ३। १ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं मनसा वयसा कायसा २ कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा ३ अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा।

४—अङ्क एक २१ का–भाङ्गे ९। दो करण एक योग से कहना। जैसे कि—

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा २ करू नहीं कराऊ नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा।

५—अङ्क एक २२ का—भाङ्गे ९। दो करण दो योग से कहना चाहिये।

१ करू नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा २ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा कायसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं वयसा कायसा ४ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ५ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा ६ करू नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा ७ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा ८ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा । ९ कराऊ नहीं अनुमोदू नही वयसा कायसा ।

६—अङ्क एक २३ का—भाङ्गे ३। २ करण ३ योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं मनसा वयसा कायसा २ करू नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ३ कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा ।

७—अङ्क एक ३१ का—भाङ्गे ३। तीन करण एक योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा । २. करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा ३ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं कायसा ।

८—अङ्क एक ३२ का—भाङ्गे ३। तीन करण दो योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा। २ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा कायसा। ३ करूँ नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं वयसा कायसा।

९—अङ्क एक ३३ का—भाङ्गे १। तीन करण तीन योग से कहना।

१ करू नहीं कराऊ नहीं अनुमोदू नहीं मनसा वयसा कायसा।

२५. चारित्र–पंच

१. सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ५ यथा-ख्यात चारित्र।

नव तत्त्व वर्णन

अथ नवतत्त्व वर्णन

गाथा

जीवाजीव पुण्ण पावासव्व सवरो यनिज्जरणा।
वध मोक्खो अ तहा नवतत्ताहुत्ति नायव्वा ॥१॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय।
खद देस पयेसा परमाणु अजीव चउद्दसा ॥२॥
धम्मा धम्मागासा तिय तिय भेया तहेव अद्धाय।
एए चउसन्नि दव्वे खित्ते काले भाव गुणे ॥३॥
इन्दिय कसाय अवय जोगा पच चउ पचति तिण्णिकम्मा।
किरियाउ पणवीस इमाओ ताओ अनुकम्मसो ॥४॥
समइ गुत्ति परिसह जइ धम्मो भावना चरित्ताणि।
पनत्ति दुनीस दसवार पचभेएहिं समावन्ना ॥५॥
आहा कम्मे उद्देमिय पुइकम्मेय मिस्सीजाये।
ठवणा पाहूडियाए पाओअरकिय पामिच्चे ॥६॥
परिट्टिय अभिहडेउदभिन्ने मालोहडेडय अच्छिजे।
अतिसिट्टे अज्झोयरो ये सोलस्स पिंडगम्मे दोस्सा ॥७॥

धाइ दूइ निमित्ते अजीवे वणिमगे तिगिच्छाये कोहे-माणे मायालोभे ये हवन्ति दम दोसा। पूर्विपच्छा संथवाविज्जामते चुण्ण जोगे उपायनाये दोसा सोलसम्मे मूलकम्मे।

संकिय मंक्खिय निक्खितपिहिय साहरिय दाय। गुम्मिसे। अपरिणाये लित्त छड्डिय एमण दोसा दस हवन्ति।

अणसण मुणोयरिया वित्ती संखेवण रस चाऊ। काय किलेसो सलीनाए वज्झो तवो होइ।

पायच्छित्तं विणयो वेयावच्चं तहेव सज्झाओझाणं विउसग्गोविय अभितरो तवो होइ।

पयइ सहावया वुत्तो ठिय कालोविहारियं अणुभागोर-सोणेउ पएसोदलसचउ।

संतपय परुवणयादव्वप्पमाणं च खित्त फुमणाय। कालोय अतरभावो भाविअप्पा बहु चेव।

नरगइ पणिन्दिय तस भव्व सन्नी अहक्खाय खयइ-समत्तेमुक्खोणहार केवल दसण नाणेण सेसेसु।

नवतत्त्व नाम

१ जीवतत्व २ अजीवतत्व ३ पुण्यतत्व ४ पापतत्व ५ आश्रवतत्व ६ सवरतत्व ७ निर्जरातत्व ८ बधतत्व ९ मोक्षतत्व।

इस प्रकार सर्वज्ञदेव ने नवतत्व प्रतिपादन किए हैं, जिन में—जीव, अजीव, पुण्यतत्व, यह तीन ज्ञेय (जानने योग्य) हैं। पाप, आश्रव, बध, यह तीन त्यागने योग्य हैं। सवर, निर्जरा, मोक्ष यह तीन उपादेय (ग्रहण करने योग्य) हैं।

नवतत्व में—चार रूपी, चार अरूपी, एक मिश्रित है।

जैसे—पुण्य, पाप, आश्रव, बन्ध, यह चार रूपी हैं। जीव, सवर, निर्जरा, मोक्ष यह चार अरूपी हैं। अजीव रूपी, अरूपी दोनों प्रकार का होता है।

१. जीवतत्त्व

जीव किसे कहते हैं? पुण्य पाप का कर्ता, सुख दु:ख का भोक्ता, चेतना लक्षण सहित प्राणों का धरता, अविनाशी इत्यादि लक्षणों वाले को जीव कहते हैं।

जीव का जघन्य एक भेद चेतना लक्षण, मध्यम १४ (चौदह) भेद, उत्कृष्ट ५६३ भेद हैं।

मध्यम चौदह भेद इस प्रकार हैं—

जीव का १ भेद—चेतना लक्षण।

जीव के २ भेद—१ त्रस २ स्थावर।

जीव के ३ भेद—१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुसक वेद।

जीव के ४ भेद—१ नारकी २ तिर्यञ्च ३ मनुष्य ४ देवता।

जीव के ५ भेद—पाचों जातियाँ—१ एकेन्द्रिय २ द्वीन्द्रिय ३ त्रीन्द्रिय ४ चतुरिन्द्रिय ५ पचेन्द्रिय।

जीव के ६ भेद—१ पृथ्वी २ अप् ३ तेउ ४ वायु ५ वनस्पति, ६ त्रसकाय।

जीव के ७ भेद—१ नारकीय २ देव ३ देवी ४ मनुष्य ५ मानुषी ६ तिर्यग् ७ तिर्यञ्ची।

जीव के ८ भेद—चार गति का, पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ९ भेद—पाच स्थावर, चार त्रस।

जीव के १० भेद—पाच जाति का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के ११ भेद—पाच सूक्ष्म, पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पति पर्यन्त। छ बादर पृथ्वीकाय से लेकर त्रस तक।

जीव के १२ भेद—छ काया के जीव पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के १३ भेद—१ पृथ्वीकाय २ अपकाय ३ तेउकाय ४ वनस्पतिकाय के दो भेद हैं ५ प्रत्येक ६ साधारण ७ द्वीन्द्रिय ८ त्रीन्द्रिय ९ चतुरिन्द्रिय। पचेन्द्रिय के चार भेद। १० नारकी ११ तिर्यञ्च १२ मनुष्य १३ देवता।

जीव के १४ भेद—एकेन्द्रिय के ४ भेद—सूक्ष्म, बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय के २ भेद—पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। पचेन्द्रिय के ४ भेद—सन्नी, असन्नी का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के उत्कृष्ट ५६३ भेद

नेरिय तिरियनरदेवा चउदस अडयाल तिन्नीसयतिन्नेव अठाणू सयमेगं पणसय भेयायेतेसट्ठी।

नरक के १४ भेद

१ घम्मा, २ वशा, ३ शीला, ४ अञ्जना, ५ रिट्ठा, ६ मघा, ७ माघवई, इन सातों का पर्याप्त और सातों का अपर्याप्त एव १४ चौदह।

सात नारकी के गोत्र

१ रत्न प्रभा २ शर्कर प्रभा ३ बालु प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धूम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तमतमा प्रभा एवं १४।

तिर्यञ्च के ४८ भेद

एकेन्द्रिय के २२

पृथ्वीकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

अप्काय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तेउकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वायुकाय के ४ भेद–सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वनस्पति काय के ६ भेद

सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण। इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त। एवं एकेन्द्रिय के कुल २२ भेद हुए।

विकलेन्द्रिय के ६ भेद

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के २० भेद

जलचर १ स्थलचर २ खेचर ३ उरपुर ४ भुजपुर ५ यह पाच सन्नी और पाच असन्नी। इन दस का पर्याप्त और अपर्याप्त एव २०। सर्व मिलकर तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

जीव के ८ भेद—चार गति का, पर्याप्त अपर्याप्त।

जीव के ९ भेद—पाच स्थावर, चार त्रस।

जीव के १० भेद—पाच जाति का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के ११ भेद—पाच सूक्ष्म, पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पति पर्यन्त। ६. बादर पृथ्वीकाय से लेकर त्रस तक।

जीव के १२ भेद—६ काया के जीव पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के १३ भेद—१ पृथ्वीकाय २ अप्काय ३ तेउकाय ४ वनस्पतिकाय के दो भेद हैं ५ प्रत्येक ६ साधारण ७ द्वीन्द्रिय ८ त्रीन्द्रिय ९ चतुरिन्द्रिय। पचेन्द्रिय के चार भेद। १० नारकी ११ तिर्यञ्च १२ मनुष्य १३ देवता।

जीव के १४ भेद—एकेन्द्रिय के ४ भेद—सूक्ष्म, बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय के २ भेद—पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त, अपर्याप्त। पचेन्द्रिय के ४ भेद—सन्नी, असन्नी का पर्याप्त, अपर्याप्त।

जीव के उत्कृष्ट ५६३ भेद

नेरिय तिरियनरदेवा चउदस अडयाल तिन्नीसयतिन्नेव अठाणू सयमेग पणसय भेयायेतेसट्ठी।

नरक के १४ भेद

१ घम्मा, २ वशा, ३ शीला, ४ अञ्जना, ५ रिट्ठा, ६ मघा, ७ माघवई, इन सातों का पर्याप्त और सातों का अपर्याप्त एव १४ चौदह।

सात नारकी के गोत्र

१ रत्न प्रभा २ शर्कर प्रभा ३ बालु प्रभा ४ पंक प्रभा ५ धूम प्रभा ६ तम प्रभा ७ तमतमा प्रभा एवं १४।

तिर्यञ्च के ४८ भेद

एकेन्द्रिय के २२

पृथ्वीकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

अप्काय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तेउकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वायुकाय के ४ भेद—सूक्ष्म बादर का पर्याप्त और अपर्याप्त।

वनस्पति काय के ६ भेद

सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण। इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त। एवं एकेन्द्रिय के कुल २२ भेद हुए।

विकलेन्द्रिय के ६ भेद

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीनों का पर्याप्त और अपर्याप्त।

तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के २० भेद

जलचर १ स्थलचर २ खेचर ३ उरपुर ४ भुजपुर ५ यह पाच सन्नी और पाच असन्नी। इन दस का पर्याप्त और अपर्याप्त एवं २०। सर्व मिलकर तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

जो जल में चले उसे जलचर कहते है। जैसे—मच्छ, कच्छ, मगर, गाहा, सुममारादि, इनका कुल २२॥ लाख करोड का है।

जो पृथ्वी पर चले उसे स्थलचर कहते है। जैसे—एक खुरा–गधा, घोडा, खच्चर आदि। दो खुरा–गाय, भैंस, बकरी आदि। गडीपया–हाथी, गैंडा आदि। सन्नीपया–शेर, बिल्ली, कुत्ता, आदि। इनका कुल १० करोड का है।

जो आकाश में उडने वाले जीव है उन्हें खेचर कहते हैं। जैसे—चरम पखी–चमडे के पंख वाले। चामचिडी, (चमगीदड) आदि। रोम पखी–जैसे, तोताचिडी, कबूतर आदि। समुद्र पखी–जिमके पख डब्बे के आकार के हैं, यह अढाई द्वीप के बाहर होते हैं। वितत पखी–जिनके पंख कमलदान के आकार के होते हैं। यह भी अढाई द्वीप के बाहर होते हैं। इनका कुल दो लाख करोड का होता है।

जो छाती के बल से चलें उनको उरपुर कहते हैं। जैसे—अहि, अजगर, महोरग, आसालिया आदि। इनका कुल २० करोड़ का होता है।

जो भुजाओं के वल से चलें उनको भुजपुर कहते है। जैसे—नेवल, चूहा, गलहरी, आदि। इनका कुल ९ करोड का होता है।

इस प्रकार तिर्यञ्च के ४८ भेद हुए।

३०३ तीन सौ तीन प्रकार के मनुष्य

१५ (पन्द्रह) कर्मभूमि के मनुष्य, ३० (तीस) अकर्मभूमि के मनुष्य, ५६ (छप्पन) अन्तर्द्वीपों के मनुष्य, यह सब एक सौ एक हुए। इन एक सौ एक का पर्याप्त और अपर्याप्त दो सौ दो हुए। एक सौ एक भेदों के समूर्च्छिम मनुष्य=अपर्याप्त। कुल तीन सौ तीन हुए।

१५ कर्मभूमि के मनुष्य—कर्मभूमि किसे कहते हैं? जहां असि–खड्गविधि, मसी–लेखनविधि, कृषि–खेती कर्म, राज्यनीति–साधु, साध्वी, धर्म व्यवहार, ७२ कला मनुष्यों की, ६४ कला स्त्रियों की १०० एक सौ प्रकार का शिल्पकर्म। जहां पर यह सर्व कार्य विद्यमान हों उसे कर्मभूमि कहते हैं। ५ भरत, ५ इरावर्त, ५ महाविदेह, यह १५ कर्मभूमि मनुष्यों के क्षेत्र हैं। एक लाख योजन का जम्बूद्वीप है। इसमें एक भरत, एक इरावर्त, एक महाविदेह यह तीन क्षेत्र हैं।

जम्बूद्वीप के चारों ओर दो लाख योजन का लवण समुद्र है। लवण समुद्र के चारों ओर ४ लाख योजन का धातकी खण्ड है। धातकी खण्ड में २ भरत, २ इरावर्त, २ महाविदेह, यह ६ क्षेत्र हैं। धातकी खण्ड के चारों ओर आठ लाख योजन का कालोदधि समुद्र है। कालोदधि के चारों ओर १६ लाख योजन का पुष्करद्वीप है। इसके मध्य चारों ओर मानुष्योत्तर पर्वत है, उसके आभ्यन्तर अर्ध-

पुष्कर द्वीप में मनुष्य रहते हैं। उसमें २ भरत, २ इरावर्त, २ महाविदेह, यह छः क्षेत्र हैं।

३० अकर्मभूमि के मनुष्य। अकर्मभूमि किसे कहते हैं? असि–खड्गविधि, मसी–लेखनविधि, कृषि–खेतीकर्म, राजनीति–साधु, साध्वी, धर्म-व्यवहार नहीं, ७२ कला पुरुषों की ६४ कला स्त्रियों की नहीं। १०० प्रकार का शिल्पकर्म नहीं, जहां इत्यादि कार्य नहीं, उन्हें अकर्म-भूमि-क्षेत्र कहते हैं।

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु, ५ हरिवास, ५ रम्यकवास, ५ हेमवय, ५ हिरण्यवय, यह तीस हुए। इनमें से १ देवकुरु, १ उत्तरकुरु, १ हरिवास, १ रम्यकवास, १ हेमवय, १ हिरण्यवय यह छः क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ देवकुरु, २ उत्तरकुरु, २ हरिवास, २ रम्यकवास, २ हेमवय, २ हिरण्यवय, यह १२ बारह क्षेत्र धातकी खण्ड में हैं।

२ देवकुरु, २ उत्तरकुरु, २ हरिवास, २ रम्यकवास, २ हेमवय, २ हिरण्यवय, यह १२ क्षेत्र अर्धपुष्कर द्वीप में हैं। एवं सर्व ३० हुए। १० प्रकार के कल्पवृक्षों से अकर्मभूमि के मनुष्यों की इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

१० प्रकार के कल्पवृक्षों के नाम

१ मतयगा=मधु रस, सुगन्धित फलों का दाता।

२ भयगा=अनेक प्रकार के वर्तनों का दाता।

३ तुडियगा=४९ प्रकार के वाद्ययन्त्रों का दाता जिनसे स्वर निकलते हैं

४ दीवी=जिससे रोशनी निकलती है।

५ जोई=सूर्यवत् तेज क्रान्ति वाले।

६ चित्रगा=चित्राम सहित फूलों की माला-गुच्छे है जिसमे।

७ चितरसा=मनोगम भोजन सामग्री के दाता।

८ अनयगा=जिनमें अनेक प्रकार के वस्त्रों का काम देने वाले गुण हैं।

९ मनयगा=जिनमे अनेक प्रकार के आभूषणों के देने जैसे गुण हैं।

१० गेह कारा=शोभन घरों के आकार वाले मनोगम शयनादि विश्राम का दाता।

५६ अन्तरद्वीपे मनुष्य कहा है?

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की मर्यादा करने वाला चूलहेमवन्त पर्वत है। पीला स्वर्णमयी १०० योजन का ऊचा, २५ योजन का भूमि में १०५२ योजन १२ कला का चौडा २४९३२ योजन का लम्बा, इसकी बाह ५३५० योजन २५ कला की एक एक है, इसकी जिह्वा २४९३२ योजन, पोण कला की है। इसकी धनुष पिष्ठिका २५२३० योजन ४ कला की है। पर्वत के पूर्व पश्चिम मे ४ दाढा हैं। एक एक चौरासी सौ योजन से कुछ अधिक लवण समुद्र मे लम्बी हैं। एक एक दाढ पर सात सात अन्तरद्वीप (मुलक) हैं। सो इस प्रकार हैं—

जम्बूद्वीप की जगती के कोट से लवण समुद्र में ३०० योजन जावे तो पहिला अन्तरद्वीप है। अर्थात—

३०० योजन का अन्तर ३०० योजन का द्वीप।
आगे ४०० योजन का अन्तर ४०० योजन का द्वीप।
आगे ५०० योजन का अन्तर ५०० योजन का द्वीप।
आगे ६०० योजन का अन्तर ६०० योजन का द्वीप।
आगे ७०० योजन का अन्तर ७०० योजन का द्वीप।
आगे ८०० योजन का अन्तर ८०० योजन का द्वीप।
आगे ९०० योजन का अन्तर ९०० योजन का द्वीप।

इसी तरह एक एक दाढ पर सात सात द्वीप हैं। चारों दाढों के सात चौक २८ अन्तरद्वीप हुए।

इसी प्रकार इरावर्त क्षेत्र की मर्यादा करने वाला सिखरी पर्वत है। चूलहेमपर्वत की तरह ही वर्णन है। उसका रंग सफेद है। सात चौक २८ अन्तरद्वीपे सिखरी पर्वत की दाढों पर हैं।

इस प्रकार अट्ठाईस के द्विगुण ५६ अन्तरद्वीप हुए।

अन्तर्द्वीपों के नाम

एगरूआ १ अभासिया २ वेसाणिया ३ नंगोलिया ४ हयकन्ने ५ गयकन्ने ६ गोकन्ने ७ सकुलीकन्ने ८ आयसमुहे ९ मिंढमुहे १० अयोमुहे ११ गोमुहे १२ आसमुहे १३ हत्थीमुहे १४ सिंहमुहे १५ वग्घमुहे १६ आसकन्ने १७ हत्थीकन्ने १८ अकन्ने १९ कन्न पाउरण २० उक्कामुहे २१

मेहमुहे २२ विज्जुमुहे २३ विज्जुदन्ते २४ घणदन्ते २५ लठदन्ते २६ गुठदन्ते २७ सुधदन्ते २८ ।

अट्ठाईस चुलहेमवन्त पर्वत के अट्ठाईस सिखरी पर्वत के।

इति ५६ अन्तरद्वीपे मनुष्य वर्णन।

१५ कर्मभूमि ३० अकर्मभूमि ५६ अन्तरद्वीप यह १०१ हुए। इनका पर्याप्त और अपर्याप्त २०२ हुए। इन्हीं के १०१ क्षेत्रों के समूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त सर्व मिलकर मनुष्यों के ३०३ भेद हुए।

समूर्च्छिम मनुष्य १४ स्थानों में उत्पन्न होते हैं। १४ स्थानों के नाम—उच्चारेसु वा १ पासवणेसु वा २ खेलेसु वा ३ सघाणेसु वा ४ वतेसु वा ५ पित्तेसु वा ६ पूयेसु वा ७ सोणियेसु वा ८ सुक्केसु वा ९ सुक्कपुद्गलपरिसाडेसु वा १० मृतकजीवकलेवरेसु वा ११ स्त्रीपुरुषसयोगेसु वा १२ नगरनिद्धवनेसु वा १३ सर्वअसुचीस्थानेसु वा १४।

१९८ प्रकार के देवता

१० प्रकार के भवनपति देव—असुर कुमार १ नाग कुमार २ सुवर्ण कुमार ३ विद्युत् कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधि कुमार ७ दिशा कुमार ८ पवन कुमार ९ स्थणित कुमार १०।

१५ प्रकार के परमाधर्मी देव—अवे १ अमरसे २ सामे ३ सबले ४ रुद्दे ५ विरुद्दे ६ काले ७ महाकाले ८ असीपत्ते

त्रस नाम की १० प्रकृति

१ त्रस नाम २ बादर नाम ३ प्रत्येक नाम ४ पर्याप्त नाम ५ स्थिर नाम ६ शुभ नाम ७ सौभाग्य नाम ८ सुस्वर नाम ९ आदेय नाम १० यशोकीर्ति नाम।

इति पुण्यतत्त्व समाप्त।

४ पापतत्त्व

पापतत्त्व किसे कहते हैं ? पाप बांधना सुलभ, भोगना कठिन। पाप प्राणी को दुःख देता है, आत्मा को भारी करता है, अशुभ गतियों में रुलाता है, अशुभ कर्मों के बांधने में सहायक होता है, इत्यादि रोग शोक कष्ट देने वाले को पाप तत्त्व कहते हैं।

पाप १८ प्रकार से बांधा जाता है

१ प्राणातिपात २ मृषावाद ३ अदत्तादान ४ मैथुन ५ परिग्रह ६ क्रोध ७ मान ८ माया ९ लोभ १० राग ११ द्वेष १२ कलह १३ अभ्याख्यान १४ पैशुन्य १५ परपरिवाद १६ रति अरति १७ मायामृषा, १८ मिथ्यादर्शन शल्य।

पाप ८२ प्रकार से भोगा जाता है

आठ कर्मों के उदय

१ ज्ञानावरणीय कर्म की ५ प्रकृति—१ मतिज्ञानावरणीय २ श्रुतज्ञानावरणीय ३ अवधिज्ञानावरणीय ४ मन पर्यवज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय।

२ दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृतिये—१ चक्षुदर्शनावरणीय

२ अचक्षुदर्शनावरणीय ३ अवधिदर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्तनोधि ।

३ वेदनीय कर्म की एक प्रकृति—असातावेदनीय ।

४ मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति—जिसमें १६ कषाय नव नोकषाय ।

१६ कषाय

अनन्तानुबधी का चौक—अनन्तानुबधी का क्रोध जैसे पत्थर की रेखा । मान जैसे वज्र का स्तम्भ । माया जैसे बॉस की जड़ का बल । लोभ जैसे क्रिमचि मजीठ का रग। इन चारों की स्थिति आयु पर्यन्त की, घात करें सम्यक्त्व की, गति नरक की ।

अप्रत्याख्यानी का चौक—अप्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे सूखे तालाव (जलाशय) की रेखा, मान जैसे हाड का स्तम्भ, माया जैसे मेंढे के सींगों का बल, लोभ जैसे नगर की मोरी के कीचड का रग, इन चारों की स्थिति एक वर्ष की, घात करे देशवृत्त की (श्रावक व्रत की) गृहस्थ व्रत की, गति तिर्यञ्च की ।

प्रत्याख्यानी का चौक—प्रत्याख्यानी का क्रोध जैसे गाडी के पहिये की रेखा (लकीर) मान जैसे काष्ठ का स्तम्भ, माया जैसे चलते बैल के पेशाब का बल, लोभ जैसे गाडी के खजन का रग । इन चारों की स्थिति चार मास की, घात करे

साधुव्रत की (सर्व व्रत की) गति मनुष्य की।

सज्वलन का चौक—सज्वलन का क्रोध जैसे पानी की रेखा (लकीर), मान जैसे तृण का स्तम्भ, माया जैसे ऊन के धागे का वल, लोभ जैसे हलदी के पत्ते का रग। स्थिति क्रोध की २ मास की, मान की १ मास की, माया की १५ दिन की। लोभ की अन्तर्मुहूर्त की, घात करे वीतरागपद की, गति देवलोक की।

नव नोकषाय—१ हास २ रति ३ अरति ४ भय ५ शोक ६ दुर्गंछा ७ स्त्रीवेद ८ पुरुषवेद ९ नपुसकवेद ९।

मोहनीय कर्म की एक प्रकृति—एक मिथ्यात्व मोहनीय। इस प्रकार कुल २६ हुई।

५ आयु कर्म की एक प्रकृति—नरक की आयु।

६ नाम कर्म की ३४ प्रकृति।

गति दो—१ नरक गति २ तिर्यञ्च गति।

जाति चार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय।

सहनन पाच—ऋषभ नाराच १ नाराच २ अर्द्धनाराच ३ कीलक ४ सेवार्त्तक सहनन ५।

सस्थान पाच—१ न्यग्रोधपरिमण्डल सस्थान २ सादि सस्थान ३ वामन सस्थान ४ कुब्ज सस्थान ५ हुण्डक सस्थान।

अशुभ चार—१ अशुभ वर्ण २ अशुभ गन्ध ३ अशुभ रस ४ अशुभ स्पर्श।

अनापूर्वी दो–१ नरक की अनापूर्वी २ तिर्यञ्च की अनापूर्वी ।

चाल एक–अशुभ चाल ।

घात एक–अपघात नाम ।

स्थावर नाम की १० प्रकृति–१ स्थावर नाम २ सूक्ष्म नाम ३ अपर्याप्त नाम ४ साधारण नाम ५ अस्थिर नाम ६ अशुभ नाम ७ दुर्भाग्य नाम ८ दुस्वर नाम ९ अनादेय नाम १० अयशोकीर्ति नाम ।

गोत्र कर्म की एक प्रकृति–नीच गोत्र ।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोगान्तराय ४ उपभोगान्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय । एवं ८२ ।

इति पापतत्त्व समाप्त।

५ आश्रव तत्त्व

आश्रवतत्त्व किसे कहते हैं ? जीव रूपी तालाब में आश्रवरूपी नाला से पाप रूपी पानी आवे जिससे आत्मा मलिन और भारी होकर संसार में जन्म, मरण, जरा, रोग, शोक आधिव्याधि अशुभ कर्म बन्ध भोगता फिरे उसको आश्रव तत्त्व कहते हैं ।

आश्रवतत्त्व के जघन्य बीस भेद

१ मिथ्यात्व आश्रव २ अव्रत आश्रव ३ प्रमाद आश्रव

४ अशुभ योग आश्रव ५ कषाय आश्रव ६ प्राणातिपात–जीव की हिंसा करे तो आश्रव ७ मृषावाद–झूठ बोले तो आश्रव ८ अदत्तादान–चोरी करे तो आश्रव ९ मैथुन सेवे तो आश्रव १० परिग्रह रखे तो आश्रव ११ श्रोत्रेन्द्रिय को राग में वर्तावे तो आश्रव १२ चक्षुरिन्द्रिय को राग मे वर्तावे तो आश्रव १३ घ्राणेन्द्रिय को राग मे वर्तावे तो आश्रव १४ रसनेन्द्रिय को राग में वर्तावे तो आश्रव १५ स्पर्शेन्द्रिय को राग में वर्तावे तो आश्रव १६ मन अशुभ वर्तावे तो आश्रव १७ वचन अशुभ वर्तावे तो आश्रव १८ काया को अशुभ वर्तावे तो आश्रव १९ भण्डोपगरण वस्त्र पात्र अयत्न से लेवे तो आश्रव २० सुई कुशाग्र मात्र अयत्न से लेवे, देवे, रक्खे तो आश्रव।

उत्कृष्ट ४२ भेद

जिसमें २५ क्रिया—

१ काइया–अयत्ना से शरीर को वर्तने मे।

२ अहिगरणिया–शस्त्रादि से जीवघात करने से।

३ पाउसिया–जीव अजीव पर द्वेष करने से।

४ पारियावणिया–दूसरे को दुःख देने से।

५ पाणाइवाय–हिंसा करने से।

६ आरंभिया–अनार्य व्यापार–बहुत जीव हिंसा का काम करने से।

७ परिग्गहिया–ममता करने से।

८ मायावत्तिया–कपट करके अन्य को ठगने से।

९ अपचक्खाणिया–व्रत पचखाण न करने से,अव्रत मे ।

१० मिच्छादशन वत्तिया–जिन वचनों पर श्रद्धा न करके विपरीत प्ररूपण करने से ।

११ दिट्ठिया–कौतुक–तमाशा मेला आदि अधार्मिक उत्सवों मे राग करने से ।

१२ पुट्ठिया–रागभाव से स्त्री, पुरुष, पशु, वस्त्रादि को स्पर्श करने से ।

१३ पाडुच्चिया–जीव, अजीव पर हर्ष, राग, द्वेष, ऐश्वर्य दिखलाने से ।

१४ सामतोवणिवाइया–अपने या अन्य के द्विपद चौपद वस्तुओं की राग से प्रशमा करने से ।

१५ नेसत्थिया–लकडी, ककर, पत्थर आदि पुद्गल को अयत्न से इधर उधर फैंकने मे ।

१६ साहत्थिया–अपने हाथ से किसी को सताना ।

१७ आणवणिया–पापकारी आज्ञा देना ।

१८ विदारणीया–जीव अजीव को विदारण करने से ।

१९ अणाभोगवत्तिया–अज्ञानपने शून्य उपयोग से लगे ।

२० अणवकखवत्तिया–मिथ्या अन्य धर्म की वाछा करने से

२१ अनुपयोगी–विना उपयोग कार्य करने से ।

२२ समुदाणकिरिया–अशुभ–पाप कार्य मे मनुष्यों के साथ कर्म बाधने से ।

२३ पेज्जवत्तिया–राग से।

२४ द्वेपवत्तिया–द्वेष करने से।

२५ इरियावहिया किरिया–शुभ योगों के चलने से। केवल ज्ञानी को लगती है पहले समय लगती है, दूसरे समय वेदते हैं। तीसरे समय निर्जरा देते हैं।

१७ प्रकार का असंयम

जैसे—५ इन्द्रिय ५ आश्रव ४ कषाय ३ अशुभ योग एव ४२।

इति आश्रवतत्त्व समाप्त।

६ संवर तत्त्व

सवर तत्त्व किसे कहते हैं? जीव रूपी तालाब में आश्रव रूपी नाला के द्वारा पापरूपी पानी आते हुए को सवर रूपी पट्टों से रोका जाय उसको सवर तत्व कहते हैं।

सवरतत्त्व के जघन्य २० भेद

१ सम्यक्त्व सम्वर २ व्रतपचखाण सम्वर ३ अप्रमाद सम्वर ४ अकषाय सम्वर ५ शुभयोग सम्वर ६ प्राणातिपात–जीव की हिंसा न करे तो सम्वर ७ मृषावाद–झूठ न बोले तो सम्वर ८ अदत्तादान–चोरी न करे तो सम्वर ९ मैथुन न सेवे तो सम्वर १० परिग्रह न रखे तो सम्वर ११ श्रोत्रेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १२ चक्षु इन्द्रिय वश मे करे तो सम्वर १३ घ्राणेन्द्रिय वश में करे तो सम्वर १४ रसेन्द्रिय वश में करे तो

मम्वर १५ स्पर्श इन्द्रिय वश में करे तो मम्वर १६ मन वश में करे तो मम्वर १७ वचन वश में करे तो मम्वर १८ काय वश में करे तो सम्वर १९ वस्त्रादि यतना से लेवे, देवे, रखे तो मम्वर २० सुई कुशाममात्र यतना से लेवे, रखे तो सम्वर। एवं २०।

उत्कृष्ट ५७ भेद

जिसमें २२ परिसह—१ क्षुधा परिसह २ पियास परिसह ३ शीत परिसह ४ उष्ण परिसह ५ दसमसग परिसह ६ अचेल परिसह ७ अरति परिमह ८ स्त्री परिसह ९ चरिया परिमह १० निसिहिया परिसह ११ शय्या परिसह १२ अक्रोश परिसह १३ वध परिसह १४ याचना परिसह १५ अलाभ परिमह १६ रोग परिसह १७ तणफास परिमह १८ जल्ल परिसह १९ सक्कार पुरक्कार २० पन्ना परिसह २१ अज्ञान परिसह २२ दर्शन परिसह।

आठ प्रवचन=पाच समित और तीन गुप्ति। पाच समित जैसे—१ ईर्या समित २ भाषा समित ३ एषणा समित ४ आदान भंड मत्त निक्षेपण समित ५ उच्चार पासवण खेल जल्ल सङ्घ सिंघाण परिठावणिया समित।

१ ईर्या समित के चार भेद—१ आलम्बण २ काल ३ मार्ग ४ यत्ना।

आलवण के तीन भेद—१ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र।

काल का एक भेद—ईर्या का काल दिवस का।

मार्ग का एक भेद–सयम मार्ग चले, असयम मार्ग वरजे।

यत्ना के चार भेद–द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। द्रव्य से ईर्या शोधता हुआ दश बोल वर्ज के चले।

१ शब्द २ रूप ३ गन्ध ४ रस ५ स्पर्श ६ वायणा ७ पूछना ८ परिवर्त्तना ९ अनुप्पेहा १० धर्मकथा।

क्षेत्र से–साढे ३॥ हाथ प्रमाण देखकर चले।

काल से–दिन को देखकर रात्रि को पूज कर चले, भाव से उपयोग सहित, गुण से निर्जरा के हेतु।

२ भाषा समित के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से आठ बोल वर्ज के भाषा बोले–१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ ५ हास ६ भय ७ मुखरि वचन ८ विकथा।

क्षेत्र से–जहा विचरे सब को साताकारी–प्रिय भाषा बोले।

काल से–पहर रात्रि बाद ऊचे स्वर से न बोले।

भाव से–उपयोग सहित। गुण से निर्जरा के हेतु।

४ एषणा समित के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से–साधु अपनी वृत्ति अनुसार ४२ दोष टाल कर आहार पानी ग्रहण करे। गृहस्थी अपनी वृत्ति अनुसार निर्दोष

अपने द्रव्य का ग्रहण करे। अन्य के द्रव्य पर अधिकार न करे।

क्षेत्र से—साधु अर्ध योजन उपरान्त आहार पानी ले जावे नहीं, लावे नहीं। शौच वास्ते जल उपरान्त भी ले जा सकता है। गृहस्थ—राष्ट्र धर्म को हानि न पहुंचे वहा तक व्यावहारिक कार्य करता हुआ राष्ट्रदेश को हानि न पहुंचावे।

काल से—साधु पहले पहर का आहार पानी चौथे पहर न रक्खे। गृहस्थी बिगड़ जाने वाले अन्य (दूसरों) को हानिकारक या जिससे पाप की वृद्धि हो ऐसे द्रव्यों का सचय चिरकाल तक न करे।

भाव से—साधु पाच माडले के दोष टालकर आहार पानी भोगे।

गाथा

मयोजनाप्पमाणे—इगाल धूम कारणे पढमा, वसहि वहरतरेवा रसहे उव्वस योगा।

गृहस्थ भी रसनेन्द्रिय के वश न होवे।

आदाण भड मत्त निक्षेपण समित के चार भेद—१ द्रव्य २, क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से—भडोवगरण वस्त्र पात्र आदि मर्यादा से अधिक न रक्खे।

क्षेत्र से—खुले विखरे न रक्खे।

काल से—समय पर प्रतिलेखणा करे।

भाव से–उपयोग सहित । गुण से–निर्जरा के हेतु ।

५ उचारपासवण खेल जल्लमल्लसिंघाण परिठावणिया समित के चार भेद ।

१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से–दश बोल वर्ज के परठे ।

प्रथम चौभङ्ग

१ जहा कोई आता है, देखता है, वहा नहीं परठे ।

२ जहा कोई आता है, देखता नहीं, वहा नहीं परठे ।

३ जहा कोई आता नहीं, देखता है, वहा नहीं परठे ।

४ जहा कोई आता नहीं, देखता नहीं, वहा परठे ।

दूसरे–स्व आत्मा, पर आत्मा की विराधना न हो वहा परठे ।

तीसरे–ऊची नीची भूमिका ना हो वहा परठे ।

चौथे–पोली भूमि, घास, अन्न, पत्र आदि न हो वहा परठे ।

पाचवें–थोड़े काल की अचित्त हो, वहा परठे ।

छठे–सचित्त भूमि पर न जाय, परठने वाली वस्तु ऐसी विस्तारवाली भूमि पर परठे ।

सातवें–चार अगुल प्रमाण नीचे तक अचित्त भूमि पर परठे ।

आठवें–ग्राम के पास (दृष्टिगोचर स्थान पर) न परठे ।

नौवें–चूहे आदिक के बिलों पर न परठे ।

दशवें–त्रस प्राणी बीज हरी पर न परठे । परठ के वोसरे वोसरे करे ।

क्षेत्र से–जहा विचरे ।

काल से–दिन को देखकर रात्रि को परिमार्जन करके परठे ।

भाव से–उपयोग सहित, गुण से निर्जरा के हेतु ।

तीन गुप्ति–१ मनोगुप्ति २ वचन गुप्ति ३ काय गुप्ति ।

मनोगुप्ति के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से–सरभ, समारभ, आरभ मे मन प्रवर्तावे नहीं । यदि प्रवर्ते तो फल न लगने देवे । यदि फल भी लगे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे ।

क्षेत्र से–जहा विचरे ।

काल से–आयु पर्यन्त ।

भाव से–उपयोग सहित ।

गुण से–निर्जरा के हेतु ।

वचन गुप्ति के चार भेद–१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य से–सरभ, समारभ, आरभ में वचन प्रवर्तावे नहीं । यदि प्रवर्तावे तो फल न लगने देवे, यदि फल भी लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे ।

क्षेत्र से–जहा विचरे ।

काल से–आयु पर्यन्त ।

भाव से—उपयोग सहित ।

गुण से—निर्जरा के हेतु ।

काय गुप्ति के ४ भेद—१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव।

द्रव्य से—सरभ समारभ, आरभ मे काया प्रवर्तावे नहीं। यदि प्रवर्त जावे तो फल न लगने दे, यदि फल लग जावे तो निष्फल करने का प्रयत्न करे ।

क्षेत्र से—जहा विचरे ।

काल से—आयु पर्यन्त ।

भाव से—उपयोग सहित ।

गुण से—निर्जरा के हेतु ।

१० प्रकार का यतिधर्म

१ खति २ मुत्ति ३ अज्जवे ४ मद्दवे ५ लाघवे ६ सच्चे ७ सयमे ८ तवे ९ चियाये १० बभचेरवासे ।

१२ प्रकार की भावना

१ अनित्य भावना भरत चक्रवर्ती ने भावी। २ अशरण भावना अनाथी मुनि ने भावी। ३ ससार असार भावना शालिभद्र जी ने भावी। ४ एकान्त भावना नेमिराज ऋषीश्वर ने भावी। ५ अन्य भावना मृगापुत्र जी ने भावी। ६ अशुचि-भावना सनतकुमार चक्री ने भावी। ७ आश्रव भावना समुद्र पाली ने भावी। ८ सवर भावना केशी गौतम जी ने भावी। ९ निर्जरा भावना अर्जुन माली ने भावी। १० धर्म दुर्लभ भावना धर्म रुचि अणगार ने भावी। ११ लोक स्वरूप भावना

शिवराज ऋषि ने भावी। १२ वोध दुर्लभ भावना आदिनाथ जी के ९८ पुत्रों ने भावी।

चारित्र पाच

१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्धि चारित्र ४ सूक्ष्म सपराय चारित्र ५ यथाख्यात चारित्र।

इति सवरतत्त्व समाप्त।

७ निर्जरातत्त्व

निर्जरातत्त्व किसे कहते है ? जीवरूपी वस्त्र पापरूपी मैल से जो मलिन हो रहा है उसको ज्ञान रूपी जल और तप सयम रूपी साबुन से धोकर जीव आत्मा को निर्मल करे उसको निर्जरा तत्त्व कहते हैं।

जघन्य निर्जरा तत्त्व के मुख्य १२ भेद हैं जैसे १२ प्रकार का तप—

१ अनशन २ उणोदरी ३ भिक्षाचरी ४ रस परित्याग ५ कायक्लेश ६ प्रतिसलीनता यह छ प्रकार का आभ्यन्तर (अन्दर का) तप ७ प्रायश्चित्त ८ विनय ९ वैयावृत्य १० स्वाध्याय ११ ध्यान १२ विउसग्ग। यह छ प्रकार का बाहर का तप है।

अनशन के दो भेद—१ इत्वरिकाल—थोडे समय का २ आयुकाल—आयुपर्यन्त का।

इत्वरीकाल के छ: भेद—१ श्रेणि तप २ प्रतर तप ३ घन तप ४ वर्ग तप ५ वर्गावर्ग तप ६ आकीर्ण तप।

श्रेणि तप के १४ भेद—१ व्रत २ वेला ३ तेला ४ चौला ५ पचौला ६ छौला ७ सतौला ८ अर्धमास ९ मास १० दो मास ११ तीन मास १२ चार मास १३ पाच मास १४ छ: मास तप करे।

प्रतर तप के १६ भेद—व्रत, वेला, तेला, चौला।
वेला, तेला, चौला, व्रत।
तेला, चौला, व्रत, वेला।
चौला, व्रत, वेला, तेला।

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

घण तप के ६४ भेद—१६ व्रत, १६ वेले, १६ तेले, १६ चौले तप करे।

वर्ग तप के ४०९६ चार हजार छयाणवें भेद। जैसे—एक हजार चौबीस १०२४ व्रत, एक हजार चौबीस १०२४ वेले, एक हजार चौबीस १०२४ तेले, एक हजार चौबीस चौले तप करे। एव ४०९६ हुए।

वर्गावर्ग तप के एक करोड सतसठ लाख सतत्तर हजार दो सौ सोलह भेद । (१,६७,७७,२१६) अर्थात्-४१ एकतालीस लाख चौरानवे हजार तीन सौ चार ४१९४३०४ व्रत, ४१९४३०४ बेले, ४१९४३०४ तेले, ४१९४३०४ चौले । एवं १६७७७२१६ भेद ।

वर्ग तप और वर्गावर्ग तप चौथे आरे मे किया जाता है। आज कल पचम काल में, आयुसहनन की कमी होने से नहीं हो सकते ।

आकीर्ण तप के १० भेद-१ नवकारसी २ पोरसी ३ दो पोरसी ४ एकासणा ५ एकलठाण ६ निविग्गई ७ आमिल ८ अभिग्रह ९ चरम पचखाण १० गठीसुठी छल्ला आदि अनेक प्रकार का समावेश है जिसमे आयु काल के ३ भेद-१ भक्त पचखाण सथारा, २ इगित मरण सथारा, ३ पादोपगमन सथारा।

भक्तपचखाण के ६ भेद-१ नगर के अन्दर करे । २ नगर के बाहिर करे । ३ कारण से करे । ४ विना कारण से करे । ५ पराक्रम सहित करे । ६ पराक्रम रहित करे।

इगितमरण के ७ भेद-१ नगर में करे २ नगर से बाहर करे ३ कारण से करे ४ विना कारण से करे ५ पराक्रम सहित करे ६ पराक्रम रहित करे ७ भूमि की मर्यादा करे ।

पादोपगमन के ५ भेद-१ नगर मे करे २ नगर से बाहर

करे ३ कारण से करें ४ विना कारण से करे ५ हिलन चलनादि चेष्टा से रहित करे, काष्ट शिलावत एक स्थान में ही स्थित रहे।

उनोदरी के दो भेद—१ द्रव्य उनोदरी २ भाव उनोदरी।

द्रव्य उनोदरी के तीन भेद—१ आहार उनोदरी २ उपधी उनोदरी ३ सिज्जा उनोदरी।

आहार उनोदरी के तीन भेद—पुरुष के ३२ कॅवल, स्त्री के २८ कॅवल, नपुंसक के २४ कॅवल।

पुरुष एक कॅवल छोडे और एक तीस का आहार करे तो जघन्य उनोदरी, एक तीस छोड़े एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी मध्यम उनोदरी।

स्त्री एक कॅवल छोडे और २७ का आहार करे तो जघन्य उनोदरी और २७ छोडे और एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी मध्यम उनोदरी।

नपुसक एक कॅवल छोडें, २३ का आहार करे तो जघन्य उनोदरी और २३ कॅवल छोडे एक का आहार करे तो उत्कृष्ट उनोदरी। बाकी मध्यम उनोदरी।

उपाधि उनोदरी—भण्डोवगरण—वस्त्रपात्र आदि अल्प रक्खे।

सिज्जा उनोदरी—सिज्जा सकोच के करे, सोना, बैठना, फिरना आदि।

भाव उनोदरी के भेद—१ अल्प क्रोध २ अल्प मान ३

अल्प माया ४ अल्प लोभ ५ अल्प शब्द (भाषी) ६ अल्प खिजना ७ अल्प कलह ८ अल्प तुम सुभाट ।

भिक्षाचरी के ४ भेद

१ द्रव्य २ क्षेत्र ३ काल ४ भाव ।

द्रव्य भिक्षाचरी के २६ भेद—१ उक्खित्तचरी २ णिक्खित्तचरी ३ उक्खित्त निक्खित्तचरी ४ निक्खित्त उक्खित्त चरी ५ वट्टिज्जमानचरी ६ साहरिज्जमानचरी ७ उपनीतचरी ८ अवनीतचरी ९ उपनीत अवनीतचरी १० अवनीत उपनीतचरी ११ समट्ठचरी १२ असमट्ठचरी १३ तज्जातसमट्ठचरी १४ अण्णाय चरी १५ मोणचरी १६ दिट्ठलाभे १७ अदिट्ठलाभे १८ पुट्ठलाभे १९ अपुट्ठलाभे २० भिक्खलाभे २१ अभिक्खलाभे २२ अनगिलाय २३ आवणिहिए २४ परिमित पिंडवाइ २५ सुद्धेषणाय २६ संखादत्तिये ।

क्षेत्र भिक्षाचरी के ८ भेद—१ पेडे के आकार २ अर्ध पेडे के आकार ३ सिंघाडे के आकार ४ शंख के आकार ५ गायमूत्र के आकार ६ पतंग के आकार ७ आते फरसे जाते हुए न फरसे ८ जाते हुए फरसे आते हुए न फरसे ।

कालभिक्षाचरी के चार भेद—१ पहले पहर लावे पहले पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे । २ दूसरे पहर लावे दूसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर त्यागे ३ तीसरे पहर लावे तीसरे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ४ चौथे पहर लावे चौथे पहर भोगे बाकी तीन पहर का त्याग करे ।

भाव भिक्षाचरी के भेद—तीन प्रकार की आयु की स्त्री—
१ बालक २ युवा ३ वृद्ध।

तीन प्रकार की आयु का पुरुष—१ बालक २ युवा ३ वृद्ध।

तीन प्रकार की आयु का नपुसक—१ बालक २ युवा ३ वृद्ध।

१० अमुक वर्ण ११ अमुक सस्थान १२ अमुक वस्त्र १३ बेठे हों, खडे हों १४ सिर खुले हों, ढके हों १५ आभूषण सहित हों, आभूषण रहित हों।

रस परित्याग के १६ भेद—१ प्रणीत रस का त्याग करे २ आमिल करे ३ नीवी करे ४ अरस आहार करे ५ विरस आहारे ६ अन्त आहारे ७ पत आहारे ८ लूह आहारे ९ तुच्छ आहारे १० अरस जीवी ११ विरसजीवी १२ अन्त जीवी १३ पन्तजीवी १४ लूह जीवी १५ तुच्छ जीवी १६ आयाम सित्थभोये।

काया क्लेश के १६ भेद—१ ठाण आसन करे २ निस्सहि आसन करे ३ उक्कुडु आसन करे ४ पद्म आसन करे ५ वीर आसन करे ६ लक्कड आसन करे ७ दण्ड आसन करे ८ गोदुह आसन करे ९ धनुष आसन करे १० थूक थूके नहीं ११ खाज करे नहीं १२ मैल की बत्ती उतारे नहीं १३ शरीर की शुश्रषा करे नहीं १४ शीत की वेदना सहे १५ धूप की तापना सहे १६ लोच आदिक की वेदना सहे।

प्रतिसलीनता तप के ४ भेद—१ इन्द्रिय प्रतिसलीनता २ कषाय प्रतिसलीनता ३ योग प्रतिसलीनता ४ विविक्त सयणासनप्रतिसलीनता ।

इन्द्रिय प्रतिसलीनता के ४ भेद—पाचों इन्द्रियों के २३ विषय २४० विकार इनको गोप के रखे, उदीरे नहीं, उदय आवे तो निष्फल करे ।

कषाय प्रतिसलीनता के ४ भेद—क्रोध, मान, माया, लोभ इनको गोप (उपशान्त) करके रखे, उदीरे नहीं, उदय आवे तो निष्फल करे ।

योग प्रतिसलीनता के ३ भेद—मन, वचन, काया का योग, अशुभ प्रवर्तावे नहीं, अशुभ प्रवर्त जावे तो निष्फल करे ।

विविक्त सयणासण प्रतिसलीनता के ३ भेद—स्त्री पशु नपुसक रहित स्थान भोगे सेवे । उद्यानेसुवा १ आरामेसुवा २ सुसानेसुवा ३ सुनागारेसुवा ४ गृहेसुवा ५ गिरिवादसेसुवा ६ इत्यादि अठारह प्रकार का निर्दोप स्थान सेवन करे ।

प्रायश्चित्त के ५० भेद—१० दश प्रकार से आत्मा दोष लगाता है । १ कदर्प से पीडित होकर दोष लगावे २ प्रमाद से दोष लगावे ३ अज्ञानपने से दोष लगावे ४ क्षुधा तृषा से पीडित होकर दोष लगावे ५ आपत्ति पडने पर दोष लगावे ६ भय से दोष लगावे ७ शका से दोष लगावे ८ अकस्मात् दोष लगावे ९ राग द्वेष के वश दोष लगावे १० परीक्षा के कारण दोष लगावे ।

१० प्रकार से आलोचना करता हुआ दोप लगावे—१ कांपता कांपता आलोचे तो दोप लगावे २ अनुमान प्रमाण से आलोचे तो दोप लगावे ३ देखा हुआ आलोचे अनदेखा हुआ न आलोचे तो दोप लगावे ४ सूक्ष्म सूक्ष्म आलोचे बादर बादर न आलोचे तो दोप लगावे । ५ बादर बादर आलोचे सूक्ष्म सूक्ष्म न आलोचे तो दोप लगावे ६ गुण गणाट अव्यक्त शब्दों से आलोचे तो दोप लगावे ७ ऊचे स्वर से आलोचे तो दोप लगावे ८ अनजान के आगे आलोचे तो दोप लगावे । ९ बहुतों के आगे आलोचे तो दोप लगावे १० प्रायश्चित्त के पास आलोचे तो दोप लगावे ।

१० गुणों का धारक आलोचना करता है—१ जातिवान् २ कुलवान् ३ विनयवान् ४ ज्ञानवान् ५ दर्शनवान् ६ चारित्र-वान् ७ क्षमावान् ८ वैराग्यवान् ९ पांचों इन्द्रियों को दमने वाला १० अमाई अपच्छाताई प्रायश्चित्त लेकर पश्चात्ताप न करने वाला ।

१० दश गुणों के धारक के पास आलोचना करनी चाहिये—१ आचारवन्त हो २ धारणावन्त हो ३ पांच व्यव-हारों का ज्ञाता हो जैसे—आगमव्यवहार, सूत्रव्यवहार, आज्ञा व्यवहार, धारणाव्यवहार, जीतव्यवहार । ४ प्राय-श्चित्त देकर शुद्ध करने की सामर्थ्य हो ५ लज्जा हटाने की सामर्थ्य रखता हो ६ खण्ड खण्ड करके प्रायश्चित्त देवे ७ इस लोक और परलोक का भय दिखावे ८ आलोचा हुआ दोप

प्रगट न करे ९ प्रियधर्मी होवे १० दृढधर्मी होवे।

१० प्रकार का प्रायश्चित्त—१ आलोचना प्रायश्चित्त २ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त ३ तदुभय प्रायश्चित्त ४ विवेक प्रायश्चित्त ५ व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त ६ तप प्रायश्चित्त ७ छेद प्रायश्चित्त ८ मूलप्रायश्चित्त ९ अनुठप्पा प्रायश्चित्त १० पाडुचिया प्रायश्चित्त।

विनय के सात भेद—१ ज्ञान विनय २ दर्शन विनय ३ चारित्र विनय ४ मन विनय ५ वचन विनय ६ कायविनय ७ लोकोपचार विनय।

ज्ञान विनय के ५ भेद—१ मति ज्ञानी की विनय करे २ श्रुत ज्ञानी की विनय करे ३ अवधिज्ञानी की विनय करे ४ मन पर्यव ज्ञानी की विनय करे ५ केवल ज्ञानी की विनय करे।

दर्शन विनय के दो भेद—१ शुश्रूषा विनय २ अणशा-सायणा विनय।

शुश्रूषा विनय के १० भेद—१ गुरु आवे तो खडा होवे २ आसन बिछावे ३ चार प्रकार का निर्दोष आहार पानी लाकर देवे ४ गुरु की आज्ञानुसार वरते ५ वन्दना करे (गुणग्राम करे) ६ नमस्कार करे ७ सम्मान देवे ८ आवे तो स्वागत करे ९ रहे तो सेवा भक्ति करे १० जावे तो छोडने जावे।

अणशासायणाविनय के ४५ भेद—धर्मोत्तार अरिहन्त देव की विनय करे २ अरिहन्त प्ररूपित धर्म की विनय करे

३ आचार्य की विनय करे ४ उपाध्याय की विनय करे ५ स्थविर की विनय करे ६ कुल की विनय करे ७ गण की विनय करे ८ सघ की विनय करे ९ क्रियापात्र की विनय करे १० स्वधर्मी की विनय करे ११ मतिज्ञानी की विनय करे १२ श्रुत ज्ञानी की विनय करे १३ अवधिज्ञानी की विनय करे १४ केवल ज्ञानी की विनय करे १५ मनपर्यव ज्ञानी की विनय करे।

इन १५ को नमस्कार करे, वन्दना गुण ग्राम करे, इन १५ की आसातना टाले, इन १५ की सेवा भक्ति करे।

इन ४५ की कोई आसातना करता होवे, अवगुणवाद बोलता हो, गौरव को हानि पहुचाता हो तो ऐसों को मुह तोड उत्तर देवे, शिक्षा करे, नरमाई से समझने वाले हों तो नरमाई से उनके अज्ञान को दूर करे, नहीं तो शक्ति से शिक्षा करे। यदि अपनी सामर्थ्य न हो तो सुने नहीं एकान्त मे चला जावे और सामर्थ्य पैदा करने का प्रयत्न करे।

चारित्र विनय के ५ भेद—१ सामान्य चारित्री की विनय २ छेदोपस्थापनीय चारित्र की विनय करे ३ परिहार विशुद्धि चारित्री की विनय करे ४ सूक्ष्म सपराय चारित्री की विनय करे ५ यथाक्षायिक चारित्री की विनय करे।

मन विनय के दो भेद—१ प्रशस्त मन विनय २ अप्रशस्त मन विनय।

प्रशस्त मन विनय के १२ भेद—१ जेमने असावज्जे २

२ अकिरिये ३ अकम्मे ४ अकडुवे ५ अनिट्ठुरे ६ अफरुसे ७ न्यायकारी ८ अछेदकारी ९ अभेदकारी १० अपरितापणकारी ११ अनुद्वेगकारी १२ अभूओवघाइय ।

अप्रशस्त मन विनय के १२ भेद–जेअमन सावज्जे २ सकिरिये ३ सकम्मे ४ सकडुवे ५ निट्ठुर ६ फरुसे ७ अन्यायकारी ८ छेदकारी ९ भेदकारी १० परितावणकारी ११ उद्वेगकारी १२ भूओवघाइये ।

वचन विनय के दो भेद–१ प्रशस्त वचन विनय २ अप्रशस्त वचन विनय ।

प्रशस्त वचन विनय के १२ भेद–१ जे वचने असावज्जे २ अकिरिये ३ अकम्मे ४ अकडुवे ५ अनिट्ठुरे ६ अफरुसे ७ न्यायकारी ८ अछेदकारी ९ अभेदकारी १० परितावणकारी ११ अनुद्वेगकारी १२ अभूओवघाइये ।

अप्रशस्त वचन विनय के १२ भेद–१ जेवचने सावज्जे २ सकिरिये ३ सकम्मे ४ सकडुवे ५ सनिट्ठुरे ६ सफरुसे ७ अन्यायकारी ८ छेदकारी ९ भेदकारी १० अपरितापणकारी ११ उद्वेगकारी १२ भुओवघाइये ।

काया विनय के दो भेद–१ प्रशस्त काया विनय २ अप्रशस्त काया विनय ।

प्रशस्त कायाविनय के ७ भेद–१ उपयोग से चलना २ उपयोग से खडे होना ३ उपयोग से बैठना ४ उपयोग से सोना ५ उपयोग से किसी चीज को उलघना ६ उपयोग से

पलघना (पीछे आना) ७ उपयोग से पाचों इन्द्रियों को रागादि से बचा कर वश में करना।

अप्रशस्त काया विनय के ७ भेद—१ विना उपयोग चलना २ विना उपयोग खडे होना ३ विना उपयोग बैठना ४ विना उपयोग सोना ५ विना उपयोग किसी चीज को उलघना ६ विना उपयोग पीछे हटना ७ विना उपयोग इन्द्रियों को खुले रूप से रागादि मे वर्तना।

वियावच्च के १० भेद—१ आचार्य की वियावच्च करे २ उपाध्याय की वियावच्च करे ३ स्थविर की वियावच्च करे ४ कुल की वियावच्च करे ५ गण की वियावच्च करे ६ सघ की वियावच्च करे ७ नये दीक्षित की वियावच्च करे ८ रोगी की वियावच्च करे ९ तपस्वी की वियावच्च करे १० स्वधर्मी की वियावच्च करे।

स्वाध्याय के ५ भेद—१ वाचना २ पृछना ३ पर्यटना ४ अनुपेहा ५ धर्मकथा।

ध्यान के ४ भेद—१ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्म-ध्यान ४ शुक्लध्यान।

आर्त्तध्यान के ८ भेद—४ पाए ४ लक्षण।

चार पाये—१ अमनोगम शब्द रूप गन्ध रस स्पर्श का वियोग चाहे तो आर्त्तध्यान १। मनोगम शब्द, रूप, गध, रस, स्पर्श का सयोग चाहे तो आर्तध्यान २। रोगादिक कष्टों में आकुल व्याकुल अधीर होकर कष्टों का वियोग चाहे तो

आर्त्तध्यान ३। काम भोग का सयोग वाछे तो आर्त्तध्यान ४।

४ लक्षण—१ कदणिया—आक्रान्त शब्द से रोना। २ सोयणिया—सोच फिकर मे लीन होना। ३ तीयनिया—आसुओं का गिरना। ४ पीटनिया—रोने के साथ मस्तक सिर छाती आदि पीटना।

रौद्रध्यान के ८ भेद। ४ पाये ४ लक्षण।

चार पाये—१ हिंसानुवन्धी—हिंसा करने मे प्रसन्न रहे। २ मोहानुवन्धी—झूठ वोलने मे प्रसन्न रहे। ३ तेणानुवन्धी—चोरी करने मे खुश रहे। ४ सारक्खणाणुवन्धी—दूसरे को कष्ट मे फसा कर प्रसन्न होवे।

चार लक्षण— १ उष्णदोषे—थोड़ी सी वात पर वहुत रोष करना। २ वाहुल्यदोषे—थोडी सी वात पर वहुत दु ख मनावे ३ अनाण दोषे—अज्ञान के वश मे होकर द्वेष करे। ४ आमरणान्तदोषे—आयुपर्यन्त द्वेप न छोडे।

धर्मध्यान के १६ भेद ४ पाये ४ लक्षण ४ आलंबण ४ अनुप्रेक्षा।

चार पाये—१ आणाविजए—वीतराग देव की आज्ञानुसार चलने का उपयोग रक्खे। २ अवायविजए—कर्म आने के स्थान और कारणों को जाने ३ विपाक विजए—कर्मविपाक फल चिन्ते विचारे। ४ सस्थान विजए—लोक स्वरूप विचारे।

चार लक्षण—१ आणारुचि—आज्ञा पालन से रुचि रक्खे २ निसर्ग रुचि—जाति स्मरण आदि ज्ञान से धर्म की रुचि

होवे। ३ उपदेश रुचि–उपदेश सुनने मे धर्म की रुचि बढे। ४ सूत्र रुचि–शास्त्र पढने मे धर्म की रुचि होवे।

चार आलंबण–१ वायणा–शास्त्र पढना पढाना। २ पूछना–प्रश्नादि पूछना। ३ परियट्टना–आवृत्ति (बार बार पढना)। ४ धर्मकथा–धर्म व्याख्यान आदि करना।

चार अनुपेहा–१ एकत्वाणुपेहा–जीव अकेला आया अकेला जाएगा। ऐसा विचार करना। २ अणिच्चाणुपेहा–सर्व पदार्थ अनित्य अध्रुव हैं। ३ असरणानुपेहा–धर्म बिना ओर कोई शरण नहीं। ४ ससारानुपेहा–स्वकर्मानुसार सब जीव ससार मे परिभ्रमण करते हैं।

शुक्लध्यान के १६ भेद–४ पाये ४ लक्षण ४ आलंबण ४ अनुपेहा।

चार पाये–१ पुहुत्त वियक्के सवियारी–जीव आत्मा को अनेक जगह चिन्ते। उत्पात, व्यय, ध्रुव, काल, स्थिति आदि। २ एकान्त वियक्के अवियारी–एक आत्मस्वरूप को ही विचारना। ३ सुहुम किरिए अप्पडिवाई–सूक्ष्म क्रिया से बचना। ४ समूच्छिंमकिरिए अनियट्टी–तीनों योगों का रुधन करना।

चार लक्षण–१ अभय–भयसज्ञा जीते। २ असमोहे–दीक्षादि शुभ चारित्र न मुरझावे, रागमोह का परित्याग। ३ विवेगे–विवेक रखे, कर्मबन्ध से बचे। ४ विउसग्गे–त्याग तप जप के द्वारा कर्म मल से आत्मा को निर्मल करे।

चार आलंबण–१ खंति–क्षमा करे। २ मुत्ति–निर्लोभी

वने । ३ अज्जवे–सरल वने, माया कपट त्यागे । ४ मद्दवे–मद को त्याग कर कोमल प्रणामी (विनयी) बने ।

चार अणुप्पेहा (विचार)–१ अणिश्चाणुप्पेहा–ससार की अनित्यता चिन्ते (विचारे) । २ विप्परिणामाणुप्पेहा–पुद्गल (प्रकृति) अनित्य परिवर्तनशील हैं । ३ अशुभाणुप्पेहा–कर्मों का फल अशुभ है । ४ अपायाणुप्पेहा–जीवात्मा अखण्डित है, अर्थात् छेदन भेदन नहीं हो सकती ।

व्युत्सर्ग के २ भेद

१ द्रव्य व्युत्सर्ग २ भाव व्युत्सर्ग ।

द्रव्य व्युत्सर्ग के ४ भेद–१ शरीर व्युत्सर्ग २ उपाधि व्युत्सर्ग ३ गुण व्युत्सर्ग ४ भक्तपाण व्युत्सर्ग ।

भावव्युत्सर्ग के तीन भेद–१ ससार व्युत्सर्ग २ कर्म व्युत्सर्ग ३ कषाय व्युत्सर्ग ।

इति निर्जरातत्त्व समाप्त ।

८ बन्धतत्त्व

बन्ध तत्त्व किसे कहते हैं ?

शुभाशुभ योगों से कर्मरूपी लेश्याओं द्वारा आत्मप्रदेशों के ऊपर आठ कर्मों को अबरक की तकोही की तरह या इलायचीदानों पर खाण्ड की चासनी चढाने की तरह, कर्म वर्गणा जमाती है । अर्थात्–आत्मा जिन भावों से कर्म वर्गणाओं को खैंचती है, वह कर्म पुद्गल पूर्व बान्धे हुए आत्मा के कर्मों के साथ

मिलकर आत्मप्रदेशों पर ठहर जाते है उन्हे भावकर्म कहते हैं।

और कर्मों का गाढ बन्धरूप होकर आत्मप्रदेशों पर जम जाने को द्रव्य वन्ध कहते हैं। इसलिए इसको बन्धतत्त्व कहते हैं।

बन्धतत्त्व के मुख्य ४ भेद है—१ प्रकृतिबन्ध—जो कर्म बनते हैं उनमे अपने काम करने का स्वभाव पडना । २ प्रदेशबन्ध—जो कर्म जिस प्रकृति में बाधे उनमें वर्गणाओं की सख्या होना । ३ तिथिबन्ध—कर्मों का बन्ध समय की अवधि (मर्यादा) के लिये होना । ४ अनुभागबन्ध—फल देते समय कर्मों का तीव्र या मन्द फल होना ।

मन वचन काया के योगों के निमित्त से आत्मा पहले दो बन्ध करती है और क्रोधादि कषायों की तीव्र या मन्दता के अनुसार पिछले दो बन्ध पडते हैं।

१ प्रकृतिबन्ध १ मूल आठ कर्मों की १४८ प्रकृति ।

ज्ञानावरणीय की ५ प्रकृति—१ मति ज्ञानावरणीय २ श्रुत ज्ञानावरणीय ३ अवधि ज्ञानावरणीय ४ मनपर्यवज्ञानावरणीय ५ केवलज्ञानावरणीय ।

दर्शनावरणीय कर्म की ९ प्रकृति—१ चक्षु दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ केवलदर्शनावरणीय ४ अवधिदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्तिणोधि ।

वेदनीय कर्म की दो प्रकृति—१ सातावेदनीय २ असातावेदनीय ।

मोहनीयकर्म की २८ प्रकृति–जिसके दो भेद–१ चारित्र मोहनीय २ सम्यक्त्व मोहनीय।

चारित्रमोहनीय की २५ प्रकृति जो कि पापतत्त्व में आ चुकी हैं।

और सम्यक्त्व मोहनीय की ३ प्रकृति–१ मिथ्यात्व मोहनीय २ सम्यक्त्वमोहनीय ३ मिश्रमोहनीय।

आयुकर्म की ४ प्रकृति–१ नरक की आयुष २ तिर्यञ्च की आयुष ३ मनुष्य की आयुष ४ देवता की आयुष।

नाम कर्म की ९३ प्रकृति जिसमें ३७ प्रकृति पुण्यतत्त्व में हैं और ३४ प्रकृति पापतत्त्व में। यह ७१ हुईं। बाकी २२ प्रकृति इस प्रकार हैं।

५ बन्धन ५ सघातन २० बोल वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श के। इनमें से ८ बोल पुण्य और पापतत्त्व में से छोड़ देने। बाकी रही बाईस। ३७, ३४ और २२ सर्व मिलकर नाम कर्म की ९३ प्रकृति हुईं।

गोत्र कर्म की २ प्रकृति–१ नीचगोत्र २ ऊंचगोत्र।

अन्तराय कर्म की ५ प्रकृति–१ दानान्तराय २ लाभान्तराय ३ भोग अतराय ४ उपभोग अन्तराय ५ बलवीर्य अन्तराय। आठों कर्मों की सर्व मिलकर १४८ प्रकृति हुईं।

१ प्रदेशबन्ध

आठों कर्मों के दल का समूह तथा आत्मा के प्रदेशों के ऊपर आठों कर्मों की अनन्त वर्गणा, अर्थात् एक एक

आत्म प्रदेश के ऊपर अनन्त कर्मों की वर्गणा।

उदाहरण—मोतीचूर का लड्डू। सपूर्ण लड्डू को स्कन्ध कहते हैं। लड्डू का एक भाग (टुकडे) को देश कहते हैं। और दाणों को प्रदेश कहते हैं। इसी तरह कर्मरूप १ पुद्गल (प्रकृति) आत्म प्रदेशों के ऊपर स्कन्ध देश प्रदेश से आवर्णरूप है।

२ स्थितिबन्ध

आठों कर्मों की स्थिति, समय, अवधि। १ ज्ञानावरणीय २ दर्शनावरणीय ३ वेदनीय ४ अन्तराय इन चारों कर्मों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टि ३० कोडाकोड सागर की, बाधाकाल तीन हजार वर्ष का।

मोहनीय कर्म की स्थिति—जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टि ७० कोडाकोड सागर की, बाधाकाल सात हजार वर्ष का।

नामकर्म गोत्रकर्म की स्थिति—जघन्य ८ मुहूर्त की, उत्कृष्टि २० कोडाकोड सागर की, बाधाकाल २ हजार वर्ष का।

आयुकर्म की स्थिति—जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्टि ३३ सागर की, बाधाकाल नहीं।

३ अनुभागबन्ध

आठों प्रकार के कर्मों का रस ८५ प्रकार से आत्मा बांधती है और ९३ प्रकार से भोगती है।

ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध

६ प्रकार से पडता है—१ ज्ञानपडिनियाए २ ज्ञान निह्

चणियाये ३ ज्ञान अन्तराएण ४ ज्ञान प्रदोषेण ५ ज्ञान अद्मा-सायणाये ६ ज्ञानविसवाद योगेण ।

ज्ञानावरणीय कर्म १० प्रकार से भोगा जाता है—१ सोया-वन्ने २ सोयाविनानावन्ने ३ नेतावन्ने ४ नेताविनानावन्ने ५ घाणावन्ने ६ घाणाविनानावन्ने ७ रसावन्ने ८ रसावि-नानावन्ने ९ फासावन्ने १० फासाविनानावन्ने ।

दर्शनावरणीय कर्म का ६ प्रकार से बन्ध पडता है—१ दर्शन पडिनियाये २ दर्शननिह्नवनियाये ३ दर्शन अन्तराएण ४ दर्शन प्रदोषेण ५ दर्शन अद्मासायणाए ६ दर्शनविसवादयोगेण ।

२ दर्शनावरणीयकर्म ९ प्रकार से भोगा जाता है—१ चक्षु-दर्शनावरणीय २ अचक्षु दर्शनावरणीय ३ अवधि दर्शनावरणीय ४ केवलदर्शनावरणीय ५ निद्रा ६ निद्रा निद्रा ७ प्रचला ८ प्रचला प्रचला ९ स्त्यानर्द्धि निद्रा ।

सातावेदनीय कर्म जीव १० प्रकार से बांधते हैं—

१ पाणानुकंपनीयाय २ भूयानुकम्पनीयाय ३ जीवानु-कम्पनीयाय ४ सत्तानुकम्पनीयाय ५ अदु खनियाये ६ असो-यणियाय ७ अझूरणियाय ८ अतिपनियाए ९ अपिट्टनियाय १० अपरितावणियाय ।

सातावेदनीय कर्म जीव ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ मनोगमशब्द २ मनोगम रूप ३ मनोगम गन्ध ४ मनोगम रस ५ मनोगम स्पर्श ६ मन को सुखदाई ७ वचन को सुखदाई ८ काया को सुखदाई ।

असातावेदनीय कर्म जीव १२ प्रकार से बाधते हैं—

१ प्राणभूतजीव सतावे इनको दु ख नियाय २ सोयणियाय ३ झूरणियाय ४ तिप्प नियाय ५ पिट्टनियाय ६ परितापनियाय ७ वहु दु खनियाय ८ बहुसोयनियाय ९ बहुझुरणियाय १० बहुतिप्पनियाय ११ बहुपिट्टणनियाय १२ बहुपरितापनियाय।

असातावेदनीय कर्म ८ प्रकार से भोगते हैं—

१ अमनोगम शब्द २ अमनोगम रूप ३ अमनोगम गन्ध ४ अमनोगम रस ५ अमनोगम स्पर्श ६ मन को दु खदाई ७ वचन को दु खदाई ८ काया को दु खदाई।

मोहनीय कर्म ६ प्रकार से बाधता है—

१ तिव्वकोहे २ तिव्वमाने ३ तिव्वमाया ४ तिव्वलोभे ५ तिव्वदर्शनमोहनीय ६ तिव्वचारित्रमोहनी।

मोहनीय कर्म जीव ५ प्रकार से भोगते हैं—

१ मिथ्यात्व मोहनीय २ मिश्र मोहनीय ३ सम्यक्त्व मोहनीय ४ कषाय मोहनीय ५ नोकषाय मोहनीय।

आयु कर्म १६ प्रकार से बाधा जाता है।

चार प्रकार से नरक की आयुष्य बाधी जाती है—

१ महा आरंभिया २ महापरिग्रहिया ३ कुणय आहारे ४ पचेन्द्रिय वध।

चार प्रकार से तिर्यञ्च की आयुष्य बाधी जाती है—

१ माया करने से २ माया मे माया करने से ३ खोटा

तोल खोटा माप करने से ४ अलिय वयण—अपना दोष दूसरों के सिर पर लगाने से अर्थात् झूठ बोलने से।

चार प्रकार से मनुष्य की आयु बाधी जाती है—

१ प्रकृति भद्दियाए २ प्रकृति विनियाए ३ साणुक्कोसाए ४ अमच्छरियाए।

चार प्रकार से देवता की आयु बाधी जाती है—

१ सराग सयम पालने से २ सयमासयम से ३ बाल तप से ४ अकाम निर्जरा से।

आयुष्कर्म जीव ४ प्रकार से भोगता है—

१ नरक गति में २ तिर्यञ्च गति मे ३ मनुष्य गति मे ४ देवता गति में।

नाम कर्म आठ प्रकार से बाधा जाता है।

चार प्रकार से शुभ नाम कर्म बाधा जाता है—

१ काय उज्जुए २ भाव उज्जुए ३ भासा उज्जुए ४ अविसमवाद जोगेण।

१४ प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है—

१ इष्ट शब्द २ इष्ट रूप ३ इष्ट गन्ध ४ इष्ट रस ५ इष्ट स्पर्श ६ इष्ट गति ७ इष्ट स्थिति ८ इष्ट लावण्य ९ इष्ट यशोकीर्ति १० इष्ट उट्ठाण कर्म बलवीर्य पुरुषाकार ११ इष्ट स्वर १२ कान्त स्वर १३ प्रिय स्वर १४ मनोगम स्वर।

अशुभ नाम कर्म ४ प्रकार से बाधा जाता है—

१ काया अनउज्जुए २ भाव अनउज्जुए ३ भासा अनउज्जुए ४ विसमवादयोगेण।

अशुभ नाम जीव १४ प्रकार से भोगते हैं—

१ अनिष्ट शब्द २ अनिष्ट रूप ३ अनिष्ट गन्ध ४ अनिष्ट रस ५ अनिष्ट स्पर्श ६ अनिष्ट गति ७ अनिष्ट स्थिति ८ अनिष्ट-लावण्य ९ अयशोकीर्ति १० अनिष्ट उट्ठाण कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रमेण ११ अनिष्ट स्वर १२ अकंत स्वर १३ दीन हीन स्वर १४ अमनोज्ञ स्वर ।

गोत्र कर्म सोलह प्रकार से बाधा जाता है ।

आठ प्रकार का मद करने से नीच गोत्र बाधा जाता है—

१ जातिमद २ कुलमद ३ बलमद ४ रूपमद ५ तप-मद ६ लाभमद ७ सूत्र (शास्त्र) विद्यामद ८ ऐश्वर्य मद यह आठ मद करने से जीव नीच गोत्र मे पैदा होता है ।

आठ प्रकार से भोगता है—

१ जाति हीन २ कुल हीन ३ बल हीन ४ रूप हीन ५ तप हीन ६ लाभ हीन ७ सूत्र शास्त्र हीन ८ ऐश्वर्य हीन ।

आठ मद न करे तो जीव ऊंच गोत्र बाधता है—

१ जाति मद न करे २ कुल मद न करे ३ बल मद न करे ४ रूप मद न करे ५ तप मद न करे ६ लाभ मद न करे ७ सूत्र शास्त्र मद न करे ८ ऐश्वर्य मद न करे ।

आठ प्रकार से भोगा जाता है—

१ जाति श्रेष्ठ २ कुल श्रेष्ठ ३ बल श्रेष्ठ ४ रूप श्रेष्ठ ५ तप श्रेष्ठ ६ लाभ श्रेष्ठ ७ शास्त्र श्रेष्ठ ८ ऐश्वर्य श्रेष्ठ ।

अन्तराय कर्म ५ प्रकार से जीव बाधते हैं—

१ दान अन्तराय २ लाभ अन्तराय ३ भोग अन्तराय

४ उपभोग अन्तराय ५ वल्वीर्य अन्तराय । यह ५ प्रकार की अन्तराय किसी को देवे तो अन्तराय कर्म भोगना पडे । यदि किसी को अन्तराय न देवे तो नहीं भोगना पडे ।

इति बन्धतत्त्व समाप्त ।

९ मोक्षतत्त्व

मोक्षतत्त्व किसे कहते हे ?

जब मिथ्याज्ञान मिथ्यादर्शन मिथ्याचारित्र के निराकरण करने का अर्थात् छोडने का कारण मिलता हे और अव्रत्ति कषाय प्रमाद अशुभ योग कर्म बन्ध के कारण रुक जाते हैं, और पूर्व बन्धे हुए कर्मों की निर्जरा हो जाती हे, तब जीवात्मा सूक्ष्म और स्थूल शरीर से छुटकारा पाकर कर्ममल से रहित पूर्ण शुद्ध होकर, अन्तिम शरीर की अवगाहना से कुछ कम (तीसरा भाग कम) आत्म प्रदेशों की अवगाहनायुक्त ऊर्ध्व लोकाकाश के अन्त मे सिद्ध क्षेत्र पर सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा सिद्ध स्वरूप अनन्त सुखयुक्त अनन्त शक्तिवान् अतीन्द्रिय ध्रुव आनन्द मे सदा मग्न रहते हैं जन्म मरण जरा आधि व्याधि शारीरिक मानसिक सर्व प्रकार के कष्टों से रहित निर्वाण अवस्था मे सदा के लिये निराकुल वा परम कृतकृत्य हो जाते हैं उसे मोक्ष तत्त्व कहते हैं ।

१५ प्रकार से सिद्ध होते हैं

१ तीर्थ सिद्धा २ अतीर्थ सिद्धा ३ तीर्थंकर सिद्धा ४

अतीर्थंकर सिद्धा ५ गृहस्थलिंगसिद्धा ६ अन्यलिंगसिद्धा ७ स्वलिंगसिद्धा ८ स्त्रीलिंगसिद्धा ९ पुरुषलिंगसिद्धा १० नपुसकलिंगसिद्धा ११ स्वयबुद्धि सिद्धा १२ प्रत्येक बुद्धि सिद्धा १३ बुद्धबोहि सिद्धा १४ एकसिद्धा १५ अनेक सिद्धा एवं सिद्ध १५।

चार प्रकार से जीव मोक्ष में जाते हैं—

१ सम्यक् ज्ञान २ सम्यक् दर्शन ३ सम्यक् चारित्र ४ सम्यक् निर्वासना तप करने से। ज्ञानदर्शन चारित्र तप ॥४॥

नौ द्वार

१ छतापदपरूपणाद्वार २ द्रव्य प्रमाणद्वार ३ क्षेत्रप्रमाणद्वार ४ स्पर्शनाद्वार ५ कालद्वार ६ भागद्वार ७ भावद्वार ८ अतराद्वार ९ अल्प बहुतद्वार।

छत्ता पदपरूपणा के १० भेद—१ चार गति में से मनुष्य को मोक्ष है, तीन को नहीं २ पाच जाति में से पचेन्द्रिय को मोक्ष, चार को नहीं ३ छ काया में त्रस को मोक्ष, पाच को नहीं ४ सज्ञी को मोक्ष, असज्ञी को नहीं ५ भव्य को मोक्ष, अभव्य को नहीं ६ अनाहारी को मोक्ष, आहारी को नहीं ७ पाच सम्यक्त्व में से क्षायिक सम्यक्त्व को मोक्ष, चार को नहीं।

५ सम्यक्त्वों के नाम

१ उपशम सम्यक्त्व २ सहस्वादन सम्यक्त्व ३ क्षयोपशम सम्यक्त्व ४ वेदकसम्यक्त्व ५ क्षायिक सम्यक्त्व।

८ पाच ज्ञानो में से केवल ज्ञानी को मोक्ष, चार को नहीं ९ चार दर्शन में से केवल दर्शनी को मोक्ष, तीन को नहीं १० पाच चारित्र में से यथाक्षायिक चारित्री को मोक्ष, चार को नहीं।

द्रव्य से २--सिद्ध अनन्ते।

क्षेत्र से ३--लोक के असख्यातवें भाग मे सिद्ध भगवान् सच्चिदानन्द स्वरूप विराजमान है।

स्पर्शना ४--लोक का असख्यातवॉ भाग।

स्पर्शना ५--लोक का असख्यातवॉ भाग स्पर्शते हैं।

काल से ६-- एक एक सिद्ध की अपेक्षा आदि है अन्त नहीं।

बहुत व अनन्त सिद्धों की अपेक्षा आदि अन्त नहीं।

भागद्वार ७--तेईस दण्डक के जीवों से सिद्ध अनन्त गुण अधिक है। और वनस्पति की अपेक्षा से सिद्ध अनन्त गुण न्यून थोडे हैं।

भावद्वार ८--सिद्धों मे क्षायिक भाव केवल ज्ञान केवल दर्शन क्षायिक सम्यक्त्व पारिणामिक भाव होते हैं।

अन्तरा द्वार ९--केवल ज्ञान केवल दर्शन का अन्तरा नहीं सिद्धों ने फिर ससार के चक्र मे आना नहीं। जहा एक सिद्ध है वहा अनन्त सिद्ध हैं। जहा अनन्त सिद्ध हैं वहा एक सिद्ध है। सिद्धों सिद्धों मे अन्तर नहीं।

अल्पाबहुत द्वार--१ सब से थोडे नपुंसक लिंग सिद्धा।

२ स्त्रीलिंगसिद्धा सख्यात गुणा ३ पुरुषलिंग सिद्धा सख्यात गुणा।

एक समय म नपुसक १० सीझे। स्त्री २० सीझे। पुरुष १०८ सीझे।

३२–३२ आठ समय तक सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय का उत्कृष्ट ६ मास का।

३२ से ४८ तक सात समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

४९ से ६० तक ६ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

६१ से ७२ तक ५ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

७३ से ८४ तक ४ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

८५ से ९६ तक ३ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

९७ से १०२ तक २ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का।

१०३ से १०८ तक १ समय सीझे। उपरान्त विरह पडे तो जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मास का। इसी तरह सर्व बोलों में समझ लेना।

१ त्रसपणे २ नरपणे ३ सन्नीपणे ४ वज्र ऋषभ-

नाराच सघयण वाला ५ शुक्लध्यानी ६ मनुष्य गति ७ क्षायिक ८ सम्यक्त्वी ९ यथाक्षायिक चारित्रवाला पडित वीर्य १० केवलज्ञानी ११ केवलदर्शनी १२ भव्यसिद्धक १३ परम-शुक्लेशी १४ चरम शरीरी। इन चौदह गुणो वाले मोक्ष मे जाते हैं।

जघन्य दो हाथ की अवगाहना वाला १ उत्कृष्टी ५०० धनुष की अवगाहना वाला जघन्य ९ वर्ष की आयु वाला उत्कृष्ट पूर्व क्रोड की आयु वाला कर्मभूमि के मनुष्य मोक्ष में जाते हैं और नही।

इति नवतत्त्व समाप्त।

आहार पाणी के ४२ दोष।

१६ सोलह उदगम के दोप।

आहाकम्मे उद्देसिय-पुई कम्मेमिस्सी जाये। ठवणा पाहुडियाये-पाओ अरकियेपामिच्चे। परियट्टे अभिहडे-उभिन्नमालोहडे अच्छिज्जे अणिसिट्ठे अज्झोयरेणे सोलस्स-पिंडगम्मे दोसा ॥२॥ इति।

१ आहाकम्मे (आधाकर्मी) साधु के निमित्त बना हुआ लेवे तो दोप।

२ उद्देसिय (उद्देसिक) जिस साधु के निमित्त बना हो वही साधु लेवे तो आधाकर्मी। अन्य-और साधु लेवे तो उद्देसिक दोप लगे।

३ पूइकम्मे (पूति कर्म) निर्दोष आहार में आधाकर्मी की मिलावट होवे वह आहार लेवे तो पूतिकर्म दोष लगे।

४ मिस्सीजाय (मिश्रित) जो गृहस्थ अपने और साधु, दोनों के लिये बनावे वह आहार लेवे तो मिश्रित दोष लगे।

५ ठवणा (स्थापना) साधु के ही निमित्त स्थापन करके रखे और को ना देवे वह आहार लेवे तो स्थापना दोष लगता है।

६ पाहुडियाय (प्राभृतिक) अतिथि के निमित्त जो भोजन हो और थोड़ा होवे उसे अतिथि को देने से पहले लेवे तो दोष।

७ पाओर (प्रादुष्करण) अंधेरे में दीवा, बैटरी, बिजली आदि का प्रकाश करके देवे ऐसा आहार लेवे तो दोष।

८ कीय (क्रीत) साधु के निमित्त मोल लिया हुआ आहार लेवे तो दोष।

९ पामिचे (अपमित्य) साधु के निमित्त उधारा लिया हो, वह आहार लेवे तो दोष।

१० परियट्टिय (परिवर्तित) साधु के निमित्त अपना आहार देकर अन्य से और किसी प्रकार का आहार लेवे उसी आहार को साधु लेवे तो दोष।

११ अभिहडे (अभिहृत) साधु के निमित्त सम्मुख रास्ते में या उपाश्रय में आहार लावे उसे लेवे तो दोष।

१२ उदभिन्ने (उदभिन्न) लेपन करके बंध किया हुआ फुड़वा कर लेवे तो दोष।

१३ मालोहडे (मालापहृत) ऊँची, नीची, तिर्छी विषम
ाह में रक्खा हुआ आहार लेवे तो दोष क्योंकि दाता को
: का कारण है ।

१४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य) निर्बल से खोस कर दिलावे
: आहार लेवे तो दोष ।

१५ अनिसिट्ठे (अनिसृष्ट) दो मनुष्यों का साझे का
ाहार उन दोनों की मरजी के बिना लेवे तो दोष ।

१६ अझोयरे (अध्यवपूर्वक) आहार थोड़ा होने के
ारण साधु के निमित्त उसमें और आरंभ करके मिला कर
े जैसे—थोडी छाछ है और उसमें पानी मिला कर अधिक
ना दी ऐसे भोजन को लेवे तो दोष ।

इति १६ उद्गम दोष समाप्त ।

१६ उत्पातन के दोष

धाइदूई-निमित्ते-अजीवे वणीमगे तिगिन्छाय ।
कोहे माणे माया लोभे ये हवंति दस दोसा ॥३॥
पुव्व पच्छासथुवा, निज्जामते चुण्ण जोगे ।
उपायनाए दोसा, सोलसम्मेमूल कम्मे ॥४॥

१ धाई (धात्री) धाय माता की तरह किसी के बच्चों
को खिला करके आहार लेवे तो दोष ।

२ दूई (दूती) दूतपने का काम करके आहार लेवे तो दोष।

३ निमित्ते (निमित्त) भूत भविष्यत् वर्तमान आदि
निमित्त ज्योतिष बता करके आहार लेवे तो दोष ।

४ आजीवे (आजीविका) जाति बता करके आहार लेवे तो दोष।

५ वणीमग्गे (वनीपक) रंक भिखारी की तरह दीन बन कर आहार लेवे तो दोष।

६ तिगिच्छाय (चिकित्सा) वैद्य की तरह चिकित्सा करके आहार लेवे तो दोष।

७ कोहे (क्रोध) क्रोध करके आहार लेवे तो दोष।

८ माणे (मान) करके आहार लेवे तो दोष।

९ माया (दगाबाजी) कपट से आहार लेवे तो दोष।

१० लोभे (लोभ) लोभ से अधिक आहार लेवे तो दोष।

११ पुव्विं पच्छासंथुया (पूर्व पश्चात संस्तव) आहार के निमित्त, आहार लेने से पहले या आहार लेने के बाद दानी की स्तुति करे तो दोष।

१२ विज्जा (विद्या) जिससे देवी सिद्ध की जाय ऐसी विद्या बता के लेवे तो दोष।

१३ मंते (मंत्र) जिससे देवता सिद्ध किया जाय ऐसे मंत्र बता के आहार लेवे तो दोष।

१४ चुण्णा (चूर्ण) चूरण तंत्र आदि बता के आहार लेवे तो दोष।

१५ जोगे (योग) विषय आदि कुसयोग दुरात्माओं का संयोग मिलाकर आहार लेवे तो दोष।

१६ मूलकम्मे (मूलकर्म) गर्भपात कराने की ओषधि आदि ढग बताकर आहार लेवे तो दोष।

१६ उत्पातन के दोष समाप्त।

१० एषणा के दोष

संकियमक्खियनिक्खित्ते, पिहिय महारिय दायगुम्मिस्से। अपरिणायेलित छड्डये, एसणा दोसा दस हवंति ॥५॥

१ सकिये (सकित्त) गृहस्थी तथा साधु को शका हो जावे फिर भी वही आहार लेवे तो दोष।

२ मक्खिये (माक्षित्त) सचित्त पानी से हाथ या शरीर या कोई अग भीगा होवे उसके हाथ से आहार लेवे तो दोष।

३ निक्खित्ते (निक्षिप्त) सचित्त वस्तु पर अचित्त वस्तु पडी होवे उसे हटा के लेवे तो दोष।

४ पिहिये (पिहिते) अचित्त वस्तु सचित्त से ढकी होवे उसे हटा कर लेवे तो दोष।

५ सहारिये (सहृत) निर्दोष वस्तु सचित्त के साथ लगी हुई हो उसे अलग करके देवे तो दोष।

६ दायग (दायक) देने वाला रोगी, अगहीन, लगडा या अनजान हो यदि उसे वस्तु देने से कष्ट की आशका होवे तो उससे नहीं लेना यदि लेवे तो दोष।

७ उम्मिस्से (उन्मिश्र) अचित्त सचित्त मिली हुई वस्तु लेवे तो दोष।

८ अपरिणाये (अपरिणत) पूर्ण शस्त्र परिगम्या विना अर्थात् अचित्त हुए विना लेवे तो दोष ।

९ लित्त (लिप्त) थोड़े समय की (तत्काल की) लेपन की हुई भूमि पर जा करके आहारादि लेवे तो दोष ।

१० छडिय (छर्दित) गिरता पडता हुआ आहार लेने तो दोष।

१० एषणा के दोष समाप्त ।

५ मॉडले के दोष

सजोयणापमाणे, इगालधूम कारणे पडमानसियं वाहिरं तरेवा ॥६॥

६ कारण से आहार का सेवन करे

वेयणा वेयानच्चे इरिय ट्ठाये संजमट्ठाय ।
तहपाणवतियाए छट्ठपुणधम्मचिंताए ॥७॥

६ कारण से आहार का परित्याग करे

आयके उनसग्गो तितिक्खयानभचेरगुत्तिय ।
पाणीदया तनहेउ शरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥८॥

इति आहार पाणी के ४२ दोष समाप्त ।

छब्बीस द्वार

छव्वीस द्वार

गाथा

सरीर ओग्गाहणा सघयणे, सठाण कसायते हुन्ति सण्णाए ।
लेस्सा इदिय समुग्घाय, सण्णीवेद पज्जत्तेय ॥१॥
दिट्ठि दसण नाणे, अण्णाणजोगउव ओगतहाकिमाहारे ।
उववाय ठिई समोहिया, चवण गई आगई चेवपाण जोगेया ॥२॥

भावार्थ—इन दो गाथाओं में षट्विंशति २६ द्वारों की गणना की गई है । जैसे कि —

१ शरीर द्वार २ अवगाहना द्वार ३ सहनन द्वार ४ सस्थान द्वार ५ कषाय द्वार ६ सज्ञा द्वार ७ लेश्या द्वार ८ इन्द्रिय द्वार ९ समुद्घात द्वार १० सज्ञा द्वार ११ वेद द्वार १२ पर्याप्त द्वार १३ दृष्टि द्वार १४ दर्शन द्वार १५ ज्ञान द्वार १६ अज्ञान द्वार १७ योग द्वार १८ उपयोग द्वार १९ आहार द्वार २० उत्पत्ति द्वार २१ स्थिति द्वार २२ समोहिता द्वार २३ च्यवन द्वार २४ गति अगति द्वार २५ प्राण द्वार २६ योग द्वार ।

अब यथासख्या इन द्वारों की व्याख्या लिखी जाती है।

१ शरीर द्वार

शरीर पाच जो कि पचीस बोल में आ चुके हैं । नार-

कीय वा देवताओं में तीन शरीर होते हैं—

१ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ।

वायुकाय को छोडकर चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असञ्ज्ञी तिर्यञ्च और असञ्ज्ञी मनुष्य में तीन शरीर—१ औदारिक २ तेजस ३ कार्मण ।

वायुकाय सञ्ज्ञी तिर्यञ्च मानुषी में चार शरीर—१ औदारिक २ वैक्रिय ३ तेजस ४ कार्मण ।

सञ्ज्ञी मनुष्य में पाचों शरीर ।

२ अवगाहना द्वार

सातों नरकों के नारकियों की अवगाहना । जघन्य अगुल के असख्यातवें भाग मात्र है। (१) उत्कृष्टि पहली नरक में ७॥। धनुष छ अगुल की (२) दूसरे नरक में १५॥ धनुष १२ अगुल की (३) तीसरे नरक में ३१। धनुष की (४) चौथे नरक में ६२॥ धनुष की (५) पाचवें नरक मे १२५ धनुप की (६) छठे नरक में २५० धनुप की (७) सातवे नरक में ५०० धनुप की। उत्तर वैक्रिय करें तो मूल अवगाहना से दुगुनी कर सकते हैं ।

देवताओं की अवगाहना

जघन्य तो सब की अगुल के असख्यातवे भाग मात्र की । उत्कृष्टि भवनपति व्यन्तर ज्योतिषी पहले दूसरे देवलोक में सात हाथ की। तीसरे और चौथे देवलोक में छ

हाथ की। पाचवे और छठे मे ५ हाथ की। सातवे अ
मे ४ हाथ की। नववे दसवें ग्यारहवे बारहवे मे ३ हाथ
उत्तर वैक्रिय करें तो लाख योजन की कर सकते
नव नौ ग्रैवेयक मे दो हाथ की। पाच अनुत्तर वि
में एक हाथ की।

उत्तर वैक्रिय वहा पर नहीं करते। शक्ति तो है।
स्थान सूक्ष्म साधारण वनस्पति असज्ञी मनुष्य की ज
उत्कृष्ट अगुल के असख्यातवे भाग मात्र।

उत्कृष्ट साधिक १००० योजन, कमलनाल की अपे
द्वीन्द्रिय जीवों की १२ योजन की। त्रीन्द्रिय
तीन कोस की। चतुरिन्द्रिय की ४ कोस की। पञ्चे
जलचर सज्ञी असज्ञी की १००० योजन की। स्थल
असज्ञी की पृथक् कोस की। स्थलचर सज्ञी की छ कोस
खेचर सज्ञी असज्ञी की पृथक् धनुष की। उरपुर सज्ञी
१००० योजन की। उरपुर असज्ञी की पृथक् योजन
भुजपुर सज्ञी की पृथक् कोस की। भुजपुर असज्ञी की पृ
धनुष की।

मनुष्यों की अवगाहना

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु की तीन कोस की। ५ ह
वर्ष ५ रम्यकवर्ष की २ कोस की। ५ हैमवय ५ हैरण्य
एक कोस की। ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों की ८
धनुष की। पाच महाविदेह के मनुष्यों की ५०० धनुष

पाच भरत पाच ऐरावर्त की आरों के प्रमाण। पहला आरा लगते तीन कोस की। पहला उतरते दूसरा लगते दो कोस की। दूसरा उतरते तीसरा लगते एक कोस की। तीसरा उतरते चौथा लगते ५०० धनुष की। चौथा उतरते पाचवा लगते ७ हाथ की। पाचवा उतरते छठा लगते १ हाथ की। छठा उतरते पहला लगते एक हाथ से न्यून की। पहला उतरते दूसरा लगते ७ हाथ की। दूसरा उतरते तीसरा लगते ५०० धनुष की। तीसरा उतरते चौथा लगते एक कोस की। चौथा उतरते पाचवा लगते दो कोस की। पाचवा उतरते छठा लगते तीन कोस की।

तीर्थङ्करों की अवगाहना

१	श्री ऋषभदेव भगवान की		५००	धनुष की
२	श्री अजितनाथ	,,	४५०	,,
३	श्री सम्भवनाथ	,,	४००	,,
४	श्री अभिनन्दन	,,	३५०	,,
५	श्री सुमतिनाथ	,,	३००	,,
६	श्री पद्म	,,	२५०	,,
७	श्री सुपार्श्वनाथ	,,	२००	,,
	श्री चन्द्रप्रभु	,,	१५०	,,
	श्री सुविधिनाथ	,,	१००	,,
	श्री शीतलनाथ	,,	९०	,,
	श्री श्रेयासनाथ	,,	८०	,,

१२ श्री वासुपूज्य	,,	७०	,,
१३ श्री विमलनाथ	,,	६०	,,
१४ श्री अनन्तनाथ	,,	५०	,,
१५ श्री धर्मनाथ	,,	४५	,,
१६ श्री शान्तिनाथ	,,	४०	,,
१७ श्री कुंथुनाथ	,,	३५	,,
१८ श्री अरनाथ	,,	३०	,,
१९ श्री मल्लिनाथ	,,	२५	,,
२० श्री सुव्रत स्वामी	,,	२०	,,
२१ श्री नेमिनाथ	,,	१५	,,
२२ श्री अरिष्टनेमि	,,	१०	,,
२३ श्री पार्श्वनाथ	,,	९	हाथ की
२४ श्री वर्द्धमान	,,	७	,,

चक्रवर्तियों की अवगाहना

१	भरत चक्रवर्ती	की	५००	धनुष की
२	सगर	,,	४५०	,,
३	मघव	,,	४२	,,
४	सनत्कुमार	,,	४१	,,
५	शान्तिनाथ	,,	४०	,,
६	कुंथुनाथ	,,	३५	,,
७	अरनाथ	,,	३०	,,
८	सम्भूम	,,	२८	,,

९	महापद्म	,,	२०	,,
१०	हरिषेण	,,	१५	,,
११	जयनाम	,,	१२	,,
१२	ब्रह्मदत्त	,,	७	,,

वासुदेवों की अवगाहना

१	त्रिपृष्ठ	की	८०	धनुष की
२	द्विपृष्ठ	,,	७०	,,
३	सम्भव	,,	६०	,,
४	पुरुषोत्तम	,,	५०	,,
५	पुरुषसिंह	,,	४५	,,
६	पुरुष पुण्डरीक	,,	२९	,,
७	दत्त	,,	२६	,,
८	लक्ष्मण	,,	१६	,,
९	कृष्ण	,,	१०	,,

बलदेवों की अवगाहना

१	अमल	की	८०	धनुष की
२	विजय	,,	७०	,,
३	भद्र	,,	६०	,,
४	सुपर्व	,,	५०	,,
५	सुनन्दन	,,	४५	,,
६	आनन्दन	,,	२९	,,
७	नन्दन	,,	२६	,,

८	रामचन्द्र	,,	१६	,,
९	चन्द्रभद्र	,,	१०	,,

प्रतिवासुदेवों की अवगाहना

१	अश्वग्रीव	की	८०	धनुष की
२	तारक	,,	७०	,,
३	मेरक	,,	६०	,,
४	मधुकैटभ	,,	५०	,,
५	निसुम्भ	,,	४५	,,
६	बल	,,	२९	,,
७	प्रह्लाद	,,	२६	,,
८	रावण	,,	१६	,,
९	जरासन्ध	,,	१०	,,

३ संहनन द्वार

संहनन छः हैं, जो कि पचीस बोलों मे वर्णित हैं। देवता नारकीय ये छः संहनन मे रहित होते हैं। पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च असज्ञी मनुष्य इनमें एक सेवार्त्तक ही संहनन होता है। संज्ञी तिर्यञ्च संज्ञी मनुष्य में छः संहनन होते हैं। त्रेसठ शलाका पुरुष और युगलियों में और केवली भगवान् में एक वज्रऋषभ नाराच ही संहनन होता है।

४ सस्थान द्वार

सस्थान छह हैं—१ समचतुरस्र २ न्यग्रोधपरिमण्डल ३ सादि ४ वामन ५ कुब्ज ६ हुड। नारकीय पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च असज्ञी मनुष्य पञ्चेन्द्रिय म एक हुड सस्थान होता है। पृथिवीकाय का मसूर की दाल के समान सस्थान। अप्काय का पानी के बुद्बुद के समान तेजोकाय का सुइयों की राशि के अग्र भाग के समान। वायु काय का पत्ते के आकार। वनस्पति काय का नाना प्रकार का सस्थान है। सज्ञी तिर्यञ्च और सज्ञी मनुष्य मे छ ही सस्थान होते हैं, किन्तु त्रेसठ शलाका महापुरुष, युगलिये और देवताओं में एक समचतुरस्र ही सस्थान होता है।

५ कषाय द्वार

कषाय चार हैं—१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ। त्रयोविंशति दण्डकों में यह ४ कषाय नियम से ही हो सकते हैं। किन्तु सज्ञी मनुष्यों में इन चारों कषायो की भजना है। तथा (१) नारकियों मे क्रोध विशेष (२) मनुष्यों में मान विशेष (३) तिर्यञ्च मे माया विशेष (४) देवताओं मे लोभ विशेष।

६ सज्ञा द्वार

सज्ञा चार हैं—१ आहार २ भय ३ मैथुन ४ परिग्रह त्रयोविंशति दण्डकों में यह चारों ही सज्ञा नियम से होती है, किन्तु सज्ञी मनुष्यों मे इनकी भजना है। १ तथा आहार सज्ञा तिर्यञ्च में विशेष २ भय सज्ञा नारकियों में विशेष ३

मैथुन सज्ञा मनुष्यों मे विशेष ४ परिग्रह सज्ञा देवताओ मे विशेष।

७ लेश्या द्वार विषय

लेश्या छ हैं—१ कृष्ण २ नील ३ कापोत ४ तेजो ५ पद्म ६ शुक्ल। पहले और दूसरे नरक मे कापोत लेश्या है। तीसरे नरक में कापोत लेश्या नारकी बहुत हैं, और नील लेश्या थोडे हैं। चतुर्थ नरक मे नील लेश्या होती है। पाचवें नरक मे नील लेशी नारकी बहुत और कृष्ण लेशी थोडे हैं। छठे नरक में कृष्ण लेशी नारकी हैं। सातवे नरक मे महाकृष्ण लेशी नारकी हैं। भवनपति वानव्यन्तर देवों मे कृष्ण, नील, कापोत और तेजो यह चारों लेश्यायें होती हैं। ज्योतिषियों और पहले दूसरे देवलोक मे एक तेजो लेश्या होती है। तीसरे देवलोक से लेकर पाचवें देवलोक पर्यन्त एक पद्म लेश्या होती है। छठे स्वर्ग से लेकर २६वें देवलोक पर्यन्त एक शुक्ल लेश्या होती है। बादर, पृथिवी, पानी, वनस्पति, अपर्याप्त मे चार लेश्याए (कृष्ण, नील, कापोत, तेजो) होती है। पाच स्थावर सूक्ष्म पर्याप्त और पाच स्थावर बादर पर्याप्त तेजोकाय और वायुकाय पर्याप्त वा अपर्याप्त इनमे तीन लेश्यायें (कृष्ण, नील, कापोत) होती हैं। तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च मनुष्य पञ्चेन्द्रिय मे तीन लेश्यायें कृष्ण नील कापोत होती हैं। सज्ञी तिर्यञ्च सज्ञी मनुष्यों मे छ लेश्यायें होती हैं। किन्तु युगलियों मे कृष्ण नील कापोत तेजो यह चारों लेश्यायें होती हैं।

८ इन्द्रिय द्वार विषय

इन्द्रिय पाच हैं, जो कि पचीस बोलों में आ चुकी हैं। नारकी और देवताओं में पाचों इन्द्रिया होती हैं। पाच स्थावरों में एक स्पर्शेन्द्रिय होती है। द्वीन्द्रिय जीवों में दो इन्द्रिया (रस और स्पर्श) होती हैं। त्रीन्द्रिय जीवों में तीनों इन्द्रिया होती हैं (जैसे—१ घ्राण २ रस ३ स्पर्श)। चतुरिन्द्रिय जीवों मे चारों इन्द्रिय (१ चक्षु २ घ्राण ३ रस ४ स्पर्श) होती हैं। असन्नी तिर्यञ्च और सन्नी मनुष्यों में पाचों इन्द्रिया होती हैं। सन्नी तिर्यञ्च और सन्नी मनुष्यों में पाचों इन्द्रिया होती हैं।

९ समुद्घात द्वार विषय

समुद्घात सात प्रकार की हैं—१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणान्तिक ४ वैक्रिय ५ तैजस ६ आहारिक ७ केवली।

नारकियों में चार समुद्घात हैं—(१ वेदनीय २ कषाय ३ वैक्रिय ४ मारणान्तिक) भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक। पहले देवलोक से लेकर बारहवें देवलोक पर्य्यन्त ५ समुद्घात—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणान्तिक ४ वैक्रिय ५ तेजस) हैं। १३वें देवलोक से लेकर २६ वें देवलोक पर्य्यन्त और पृथिवी पानी वनस्पति तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च, असन्नी मनुष्य पचेन्द्रिय में ३ समुद्घात—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणान्तिक) होते हैं। वायु काय में चार (१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणान्तिक ४ वैक्रिय) होते हैं। सन्नी तिर्यञ्च में

पाच—(१ वेदनीय २ कषाय ३ मारणान्तिक ४ वैक्रिय ५ तैजस) मानुषी में छ एक केवली की अधिक हुई। किन्तु सज्ञी मनुष्य में सात ही समुद्घात पड़ते हैं।

१० संज्ञी असज्ञी द्वार विषय

पहले नरक में सज्ञी और असज्ञी दोनों उत्पन्न होते हैं। किन्तु पहले नरक से आगे दूसरे नरक से लेकर सातवें नरक पर्य्यन्त सज्ञी जीव ही उत्पन्न होते हैं। भवनपति वानव्यन्तर देवताओं में सज्ञी और असज्ञी दोनों ही उत्पन्न होते हैं। ज्योतिषियों से लेकर वैमानिकों पर्य्यन्त केवल एक सज्ञी जीव ही उत्पन्न होता है। ५ स्थावर ३ विकलेन्द्रिय कुल ८, असज्ञी तिर्यञ्च ९ असज्ञी मनुष्य १०, यह सर्व असज्ञी जीव होते हैं। किन्तु १ सज्ञी तिर्यञ्च २ सज्ञी मनुष्य यह सज्ञी होते हैं।

११ वेद द्वार विषय

१ स्त्री वेद २ पुरुष वेद ३ नपुंसक वेद, नारकीय, पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च असज्ञी मनुष्य में एक नपुंसक वेद ही होता है। भवनपति, वानव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक पहले और दूसरे देवलोक पर्य्यन्त दो वेद होते हैं—१ स्त्री २ पुरुष। तीसरे देव से लेकर २६ वें देवलोक पर्यन्त केवल एक पुरुष वेद ही होता है। सज्ञी तिर्यञ्च और सज्ञी मनुष्यों में तीन वेद ही होते हैं।

१२ पर्य्याप्त द्वार

पर्य्याप्त ७ हैं, जो कि पच्चीस बोलों मे आ चुके हैं। एकेन्द्रिय मे ४ पर्य्याप्त होते हैं। जैसे कि १ आहार २ शरीर ३ इन्द्रिय ४ श्वासोश्वास। तीन विकलेन्द्रियों, असन्नी तिर्यञ्च पचेन्द्रिय मे ५ पर्य्याप्त हैं। किन्तु मन पर्याप्त नहीं। और असन्नी मनुष्य में चार पर्य्याप्त होते है। अपितु मन पर्य्याप्त और वचन पर्य्याप्त नहीं होते। सन्नी तिर्यञ्च और सन्नी मनुष्य नारकी और देवताओं में छ पर्य्याप्त होते है।

१३ दृष्टि द्वार विषय

दृष्टि तीन है—१ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक १२ वे देवलोक पर्य्यन्त दृष्टि तीनों होती हैं। नव ग्रैवेयक विमानो में सम्यग् दृष्टि ओर मिथ्यादृष्टि यही दोनों होती हैं। अपितु पाच अनुत्तर विमानों मे एक ही सम्यग् दृष्टि होती है। पाच स्थावर पर्य्याप्त और अपर्य्याप्त, तीनों विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यञ्च, पचेन्द्रिय पर्य्याप्त मे एक मिथ्यादृष्टि होती है। असन्नी मनुष्य ५६ अन्तर्द्वीपों के युगलियों में भी एक मिथ्यादृष्टि होती है। तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च अपर्य्याप्त ३० प्रकार के युगलियों मे २ दृष्टि होती हैं। जैसे कि सम्यग् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि। सन्नी तिर्यञ्च पचेन्द्रिय और सन्नी मनुष्यों में तीन दृष्टि होती हैं। जैसे कि १ सम्यग् २ मिथ्या ३ मिश्र।

१४ दर्शन द्वार विषय

दर्शन ४ हैं, जो कि पहले आ चुके हैं। नारकी और देवताओ में ३ दर्शन होते हैं—१ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि। पांच स्थावर द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और असन्नी मनुष्य में एक अचक्षुदर्शन होता है। चतुरिन्द्रिय और असन्नी पञ्चेन्द्रिय में दो दर्शन होते हैं—१ चक्षु २ अचक्षु। सन्नी तिर्यञ्च में १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि यह तीन दर्शन होते हैं। सन्नी मनुष्य में १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि ४ केवल यह चारों दर्शन होते हैं।

१५ ज्ञान द्वार

ज्ञान पाच हैं। देवता नारकी सन्नि तिर्यञ्च में ३ ज्ञान (१ मति २ श्रुति ३ अवधि) हैं। पाच स्थावर असन्नि मनुष्य किल्बिषी परमाधर्मी देव ५६ अन्तरद्वीपे मनुष्य इनमें ज्ञान नहीं। तीन विकलेन्द्रिय असन्नि तिर्यञ्च अपर्याप्त में २ ज्ञान (१ मति २ श्रुति) हैं। पर्याप्त में नहीं। सन्नि मनुष्य में पाचों ज्ञान।

१६ अज्ञान द्वार

अज्ञान तीन (१ मति २ श्रुति ३ विभङ्ग) हैं। सात नारकी भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी २१ वें देवलोक पर्यन्त ३ अज्ञान। पाच अनुत्तर विमानों में अज्ञान नहीं। पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असन्नि तिर्यञ्च असन्नि मनुष्य

५६ अन्तरद्वीपे युगलिये इनमें २ अज्ञान (१ मति २ श्रुति) हैं। सन्नि तिर्यञ्च सन्नि मनुष्य में तीनों अज्ञान।

१७ योग द्वार विषय

योग १५ हैं। चार मन के–१ सत्य मनोयोग २ असत्य मनोयोग ३ मिश्र मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग। चार वचन के– ५ सत्य वचनयोग ६ असत्य वचनयोग ७ मिश्र वचनयोग ८ व्यवहार वचनयोग। सात काया के योग– ९ औदारिक १० औदारिक का मिश्र ११ वैक्रिय १२ वैक्रिय का मिश्र १३ आहारिक १४ आहारिक का मिश्र १५ कार्मण योग। नारकी और देवताओं में ११ योग होते हैं। जैसे कि– ४ मन के ४ वचन के यह आठ ९ वैक्रिय १० वैक्रिय का मिश्र ११ और कार्मण योग। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पति और असन्नी मनुष्यों मे तीन योग होते हैं। जैसे कि–१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण योग। वायु काय मे ५ योग होते हैं। जैसे कि–१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रिय का मिश्र ५ कार्मण योग। तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मे ४ योग होते हैं। १ [illegible] २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण ४ व्यवहार। [illegible] और मानुषी मे १३ योग होते हैं। जैसे कि– [illegible] ४ वचन के एव आठ ९ औदारिक, औदारिक का १० वैक्रिय ११ वैक्रिय का मिश्र १२ कार्मण योग १३। [illegible] सन्नी मनुष्य में १५ ही योग होते हैं।

१८ उपयोग द्वार विषय

उपयोग १२ है। जैसे कि— पाच ज्ञान, तीन अज्ञान, चार दर्शन। एव १२। नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक १२वे देवलोक पर्य्यन्त ९ उपयोग होते है। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि), तीन अज्ञान, तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि), एव ९। पाच अनुत्तर विमानों मे ६ उपयोग होते है। तीन ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि), तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि), एव ६। पाच स्थावर—असज्ञी मनुष्य, पर्य्याप्त, अपर्य्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, पर्य्याप्त इनमें ३ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ अचक्षुर्दर्शन। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय अपर्य्याप्त मे ५ उपयोग होते हैं। १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ मतिअज्ञान ४ श्रुतअज्ञान ५ अचक्षुर्दर्शन। एव ५। चतुरिन्द्रिय और असज्ञी तिर्यञ्च पचेन्द्रिय पर्य्याप्त मे ४ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति अज्ञान २ श्रुत अज्ञान ३ चक्षुर्दर्शन ४ अचक्षुर्दर्शन एव ४। समुच्चय पर्य्याप्त, अपर्य्याप्त, चतुरिन्द्रिय, असज्ञी तिर्यञ्च। पचेन्द्रिय मे ६ उपयोग होते हैं। जैसे कि—१ मति ज्ञान २ श्रुत ज्ञान ३ मति अज्ञान ४ श्रुत अज्ञान ५ चक्षुर्दर्शन ६ अचक्षुर्दर्शन। सज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में ९ उपयोग होते है। तीन ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि)। एव ९। सज्ञी मनुष्य में १२ उपयोग होते है।

५६ अन्तरद्वीपे युगलिये इनमे २ अज्ञान (१ मति २ श्रुति) हैं। सन्नि तिर्यञ्च सन्नि मनुष्य में तीनों अज्ञान।

१७ योग द्वार विषय

योग १५ हैं। चार मन के—१ सत्य मनोयोग २ असत्य मनोयोग ३ मिश्र मनोयोग ४ व्यवहार मनोयोग। चार वचन के— ५ सत्य वचनयोग ६ असत्य वचनयोग ७ मिश्र वचनयोग ८ व्यवहार वचनयोग। सात काया के योग— ९ औदारिक १० औदारिक का मिश्र ११ वैक्रिय १२ वैक्रिय का मिश्र १३ आहारिक १४ आहारिक का मिश्र १५ कार्मण-योग। नारकी और देवताओं मे ११ योग होते हैं। जैसे कि— ४ मन के ४ वचन के यह आठ ९ वैक्रिय १० वैक्रिय का मिश्र ११ और कार्मण योग। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पति और असज्ञी मनुष्यों में तीन योग होते हैं। जैसे कि—१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण योग। वायु काय मे ५ योग होते हैं। जैसे कि—१ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रिय का मिश्र ५ कार्मण योग। तीन विकलेन्द्रिय असज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय मे ४ योग होते हैं। १ औदारिक २ औदारिक का मिश्र ३ कार्मण ४ व्यवहार। सज्ञी तिर्यञ्च और मानुषी मे १३ योग होते हैं। जैसे कि— ४ मन के ४ वचन के एव आठ ९ औदारिक, औदारिक का मिश्र १० वैक्रिय ११ वैक्रिय का मिश्र १२ कार्मण योग १३। किन्तु सज्ञी मनुष्य में १५ ही योग होते हैं।

मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। असञ्ज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव पूर्वोक्त १० दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। असञ्ज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में जीव २४ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते हैं। असञ्ज्ञी मनुष्य में जीव ८ दण्डकों से आकर उत्पन्न होते है। जैसे कि–पृथ्वी, पानी, वनस्पति, तीनों इन्द्रिय, तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, मनुष्य पञ्चेन्द्रिय। सञ्ज्ञी मनुष्य में जीवते जो, वायु, काय वर्ज के शेष २२ दण्डकों से आ उत्पन्न होता है।

२१ आयु द्वार विषय

पहले नरक के नारकियों की आयु जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टि स्थिति एक सागर की, उसके प्रस्तर (पाथडे) १३ हैं। पहले प्रस्तर की जघन्य १० हजार की, उत्कृष्टि ९० हजार वर्ष की, दूसरे प्रस्तर की जघन्य ९० हजार वर्ष की उत्कृष्टि स्थिति ९० लाख वर्ष की, तीसरे प्रस्तर की जघन्य १० लाख की, उत्कृष्टि स्थिति करोड़ पूर्व की ३। इसके आगे १० प्रस्तर और है। किन्तु एक सागर के दश भाग करके प्रति प्रस्तर एक २ भाग बढा लेना चाहिए। जैसे कि–चौथे प्रस्तर की जघन्य स्थिति १ पूर्व की, उत्कृष्टि दश भाग के एक भाग की ४।

पाचवे प्रस्तर की जघन्य		एक भाग की उत्कृष्टि		२	भाग	की
छठे	,,	२	,,	३	,,	,,
सातवें	,,	३	,,	४	,,	,,
आठवें	,,	४	,,	५	,,	,,

नौवे	,,	५	,,	६	,,	
दशवें	,,	६	,,	७	,,	
एकादशवें	,,	७	,,	८	,,	
द्वादशवें	,,	८	,,	९	,,	
त्रयोदशवें	,,	९	,,	१०	,,	अर्थात्

एक सागर की १३ ।

दूसरे नरक के नारकियों की स्थिति

जघन्य १ सागर की उत्कृष्ट ३ सागर की सो जघन्य से दो सागर और बढ़ अपितु दूसरे नरक में ११ प्रस्तर हैं। सो एक सागर के ११ भाग करने चाहिए । इस प्रकार करने से दो सागरों के द्वाविंशति २२ भाग हुए । फिर प्रति प्रस्तर १ सागर दो भाग वृद्धि क्रम लेने चाहिए । जैसे कि—

पहले प्रस्तर की जघन्य १ सागर की उत्कृष्ट १ सागर दो भाग की

दूसरे	,,	१	सागर	दो	भाग	उत्कृष्ट	१ सागर	४	भाग	की
तीसरे	,,	१	,,	४	,,	,,	१	,,	६	,,
चौथे	,,	१	,,	६	,,	,,	१	,,	८	,,
		१	,,	८	,,	,,	१	,,	१०	,,
		१	,,	१०	,,	,,	२ सागर	१	की	
	,,	२	,,	१	,,	,,	२	,,	३	,,
	,,	२	,,	३	,,	,,	२	,,	५	,,
	,,	२	,,	५	,,	,,	२	,,	७	,,

दशवें ,, २ ,, ७ ,, उत्कृष्टि २ ,, ९ ,,
एकादशवे २ , ९ ,, ,, ३ सागर की

तृतीय नरक की स्थिति–जघन्य ३ सागर की, उत्कृष्टि ७ सागर की। तीसरे नरक के ९ प्रस्तर हैं। जिसमे सागर बढ ४ फिर एक २ सागर के नौ नौ भाग कर लेने चाहिये। सो (९×४) ३६ भाग हुए। फिर प्रति प्रस्तर के चार चार भाग वृद्धि कर लेने चाहिए। जैसे कि–

पहले प्रस्तर की जघन्य ३ सागर, उत्कृष्टि ३ सागर ४ भाग की
दूसरे ,, ३ ,, ४ भाग की उत्कृष्टि ३ सागर ८ भाग की
तीसरे ,, ३ ,, ८ ,, ,, ४ ,, ३ ,,
चौथे ,, ४ ,, ३ ,, ,, ४ ,, ७ ,,
पाचवें प्रस्तर की जघन्य ४ सागर ७ भाग की, उत्कृष्टि ५ सागर दो भाग की
छठे ,, ५ ,, २ ,, ५ ,, ६ ,,
सातवें ,, ५ ,, ६ ,, ६ ,, १ ,,
आठवें ,, ६ ,, १ ,, ६ ,, ५ ,,
नवमे ,, ६ ,, ५ ,, ७ सागर की

चौथे नरक में नारकियों की स्थिति–जघन्य सात सागर की, उत्कृष्टि १० सागर की, अपितु चौथे नरक के सात प्रस्तर हैं। किन्तु तीन सागर बढे। फिर एक एक सागर के सात सात भाग करने चाहियें। सो (७×३) २१ हुए। फिर प्रति प्रस्तर ३ भागों की वृद्धि कर लेनी चाहिये। जैसे कि–

पहले प्रस्तर की जघन्य सात सागर की, उत्कृष्टि ७ सागर ३ भाग की

दूसरे	,,	७ सागर	३ भाग	उत्कृष्टि	७	,,	६	,,
तीसरे	,,	७ ,,	६ ,,	,,	८	,,	२	,,
चोथे	,,	८ ,,	२ ,,	,,	८	,,	५	,,
पाचवे	,,	८ ,,	५ ,,	,,	९	,,	१	,,
छठे	,,	९ ,,	१ ,	,,	९	,,	४	,,
सातवें	,,	९ ,,	४ ,,	,,	१० सागरोपम की			

पाचवें नरक के नारकियों की स्थिति–जघन्य १० सागरोपम की, उत्कृष्टि १७ सागरोपम की, पाचवें नरक के ५ प्रस्तर हैं। जिस में सागर बढे ७। फिर प्रति प्रस्तर एक एक सागर बढा लेना चाहिये। फिर २ सागर और बढे। फिर एक सागर के पाच भाग कर लेने चाहिये। इस प्रकार करने से दो सागरों के १० भाग हुए, फिर एक सागर २ भाग प्रति प्रस्तर बढा लेना चाहिये। जैसे कि–पहले प्रस्तर की जघन्य १० सागरोपम की, उत्कृष्टि ११ सागर २ भाग की

दूसरे	,,	११ सागर	२ भाग	१२	,,	४	,,
तीसरे	,,	१२ ,,	४ ,,	१४	,,	१	,,
चौथे	,,	१४ ,,	१ ,,	१५	,,	३	,,
पाचवे	,,	१५ ,,	३ ,,	१७ सागरोपम की			

छठे नरक के नारकियों की स्थिति–जघन्य १७ सागरोपम की, उत्कृष्टि २२ सागरोपम की, छठे नरक के तीन प्रस्तर हैं।

जिसमे सागर बढे पाच। फिर पाचो सागरों मे से २ सागरों के ६ भाग कर लेने चाहिये। फिर प्रतिप्रस्तर १ सागर २ भाग की वृद्धि कर लेनी चाहिये। जैसे कि— पहले प्रस्तर की जघन्य १७ सागर की, उत्कृष्टि १८ सागर २ भाग की

दूसरे ,, १८ सागर २ भाग उत्कृष्टि २० सागर १ ,,
तीसरे ,, २० ,, १ ,, ,, २२ सागर की

सातवें नरक का एक ही प्रस्तर है। किन्तु नरकावास पाच हैं। जैसे कि—१ काले २ महाकाले ३ रौरव ४ महारौरव ५ अप्पइट्ठाण अपितु इन पाचों नरकवासों में जो पहले चार नरकवास हैं। उनमे नारकियों की जघन्य स्थिति २२ सागरोपम प्रमाण है। उत्कृष्टि स्थिति ३३ सागरोपम प्रमाण की है। किन्तु 'अप्पइठाण' नरकवास की जघन्य या उत्कृष्टि स्थिति ३३ सागरोपम प्रमाण की है। भवनपति असुरकुमारों के दो इन्द्र—१ चमरइन्द्र २ बलइन्द्र। चमरइन्द्र की राजधानी दक्षिण की ओर, बलइन्द्र की राजधानी उत्तर की ओर।

भवनपतियों की स्थिति

दक्षिण दिग् के असुरकुमारों की स्थिति—जघन्य दस हजार वर्ष की। उत्कृष्टि एक सागर की। उनकी देवियों की जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि साढे तीन पल्योपम की। दक्षिण दिग् के नवनिकाय की जघन्य दस हजार वर्ष की,

उत्कृष्टि डेढ (१॥) पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि अर्द्ध पल्योपम की।

उत्तर दिग् के असुरकुमारों की स्थिति–जघन्य दस हजार वर्ष से कुछ अधिक, उत्कृष्टि कुछ अधिक एक सागरोपम की। उनकी देवियों की स्थिति–जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि साढे चार पल्योपम की। उत्तर दिग् के नव निकाय की स्थिति–जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि दो पल्योपम से कुछ न्यून। उनकी देवियों की जघन्य दस हजार वर्ष से कुछ अधिक, उत्कृष्टि एक पल्योपम से कुछ न्यून।

वाणव्यन्तरों की स्थिति

जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि एक पल्योपम की। उन की देवियों की जघन्य दस हजार वर्ष की, उत्कृष्टि एक पल्योपम से कुछ न्यून।

ज्योतिषियों की स्थिति

चन्द्रमा के विमानवासी देवों की स्थिति-जघन्य पल्योपम के चतुर्थ भाग की, उत्कृष्टि एक पल्योपम और लक्ष वर्ष की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम के चतुर्थ भाग की, उत्कृष्टि अर्ध पल्योपम और पचास हजार वर्ष की। सूर्य के विमानवासी देवों की स्थिति–जघन्य पल्योपम के चतुर्थ भाग की, उत्कृष्टि एक पल्योपम और एक हजार वर्ष की। उनकी देवियों की स्थिति-जघन्य पल्योपम का चतुर्थ

भाग, उत्कृष्टि अर्द्ध पल्योपम ५०० वर्ष की। ग्रह विमान-वासी देवों की स्थिति–जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्टि एक पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्टि अर्ध पल्योपम की। नक्षत्र विमान-वासी देवों की स्थिति–जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्टि अर्ध पल्योपम की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का चतुर्थ भाग, उत्कृष्टि अर्द्ध पल्योपम से कुछ अधिक। तारा विमानवासी देवों की स्थिति–जघन्य पल्योपम का आठवा भाग, उत्कृष्टि पल्योपम के चतुर्थ भाग की। उनकी देवियों की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग, उत्कृष्टि आठवें भाग से कुछ अधिक।

वैमानिक देवों की स्थिति

पहले देवलोक के देवों की स्थिति–जघन्य एक पल्योपम की, उत्कृष्टि दो सागरोपम की। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम की, उत्कृष्टि सात पल्योपम की। अपरिगृहीत देवियों की जघन्य एक पल्योपम की, उत्कृष्टि ५० पल्योपम की। दूसरे देवलोक के देवों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक, उत्कृष्टि दो सागरोपम से कुछ अधिक। उनकी देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक। उत्कृष्टि नव पल्योपम से कुछ अधिक। अपरिगृहीत देवियों की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक, उत्कृष्टि ५५ पल्योपम की।

तीसरे देवलोक के देवों की स्थिति

जघन्य दो सागरोपम की, उत्कृष्टि सात सागरोपम।

चतुर्थ देवलोक के देवों की स्थिति

जघन्य दो सागरोपम से कुछ अधिक, उत्कृष्टि सात सागरोपम से कुछ अधिक।

पाचवें देवलोक के देवों की स्थिति

जघन्य ७ सागरोपम, उत्कृष्टि १० सागर की।

छठे देवलोक के देवों की स्थिति

	जघन्य	१० सागर की,	उत्कृष्टि	१४ सागर की।	
सातवें	„	१४	„	१७	„
आठवें	„	१७	„	१८	„
नववें	„	१८	„	१९	„
दशवें	„	१९	„	२०	„
एकादशवें	„	२०	„	२१	„

द्वादशवे देवलोक के देवों की जघन्य २१ सागर की, उत्कृष्टि २२ सागर की।

[illegible]वें	„	२२	„	२३	„
	„	२३	„	२४	„
	„	२४	„	२५	„
	„	२५	„	२६	„
[illegible]	„	२६	„	२७	„
[illegible]	„	२७	„	२८	„

एकोनत्रिंशतिवें ,,	२८	,,	२९	,,
२०वें ,,	२९	,	३०	,,
२१वें ,,	३०	,,	३१	,,

चार अनुत्तर विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति ३१ सागरोपम की, उत्कृष्ट ३२ सागरोपम की। सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देवों की स्थिति जघन्य और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की।

पाच स्थावरों की स्थिति

पाच स्थावरों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होती है। उत्कृष्ट का विवरण निम्नप्रकार से है। पृथ्वीकाय के छः भेद हैं। १ सण्हा २ सुद्धा ३ वालुआ ४ मणोसिला ५ सक्करा ६ खरपुढवी। इनकी यथाक्रम से स्थिति इस प्रकार है—१०, १२, १४, १६, १८, २२ हजार वर्ष की। अप्काय की सात हजार वर्ष की। तेजोकाय की ३ दिन और ३ रात्रि की। वायुकाय की तीन हजार वर्ष की। वनस्पतिकाय की दस हजार वर्ष की।

पाच स्थावर सूक्ष्म और असज्ञी मनुष्य की स्थिति

जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की। तीन विकलेन्द्रियाँ। पञ्चेन्द्रिय। किन्तु युगलिये वर्ज के शेष मनुष्यों की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्ट इस प्रकार

त्रीन्द्रिय	,,	४९	न्निों	,,
चतुरिन्द्रिय	,,	६	मास	,,

पञ्चेन्द्रिय के ५ भेद हैं। १ जलचर २ स्थलचर ३ खेचर ४ उरपुर ५ भुजपुर।

(१) जलचर सञ्ज्ञी और असञ्ज्ञी की करोड पूर्व की। (२) स्थलचर सञ्ज्ञी की तीन पल्योपम की। (३) स्थलचर असञ्ज्ञी की ८४००० वर्ष की। (४) खेचर सञ्ज्ञी की पल्योपम के असख्यातवे भाग प्रमाण। (५) खेचर असञ्ज्ञी की ७२ वर्ष की। (६) उरपुर सञ्ज्ञी की क्रोड पूर्व की। (७) उरपुर असञ्ज्ञी की ५३००० वर्ष की। (८) भुजपुर सञ्ज्ञी की एक करोड पूर्व की। (९) भुजपुर असञ्ज्ञी की ४२ हजार वर्ष की।

सञ्ज्ञी मनुष्य का निवरण

५ भरत ५ ऐरावर्त्त के पहले आरे लगते हुए और ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु के युगलिये मनुष्यों की स्थिति—जघन्य तीन पल्योपम से कुछ न्यून। उत्कृष्टि तीन पल्योपम की।

५ भरत ५ ऐरावर्त्त के पहले आरे के उतरते हुए दूसरे आरे के लगते हुए, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक वर्ष के युगलिये मनुष्यों की जघन्य दो पल्योपम से कुछ न्यून। उत्कृष्टि दो पल्योपम की।

५ भरत ५ ऐरावर्त्त दूसरे आरे उतरते हुए तीसरे आरे के लगते हुए और ५ हैमवय ५ हैरण्यवय युगलिये मनुष्यों की जघन्य एक पल्योपम की।

५ भरत, ५ ऐरावर्त्त के तीसरे आरे उतरते हुए चौथे आरे के लगते हुए और ५ महाविदेह के मनुष्यों की आयु, जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की उत्कृष्टि करोड पूर्व की।

५ भरत, ५ ऐरावर्त्त के चतुर्थ आरे के उतरते हुए पाचवे आरे के लगते हुए मनुष्यों की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टि १२० वर्ष की।

पाचवे आरे उतरते हुए छठे आरे के लगते हुए ५ भरत, ५ ऐरावर्त्त के मनुष्यों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्टि १० वर्ष की, छठे आरे उतरते हुए १६ वर्ष की। इसी प्रकार उत्सर्पिणी काल की स्थिति जाननी चाहिये। ५६ अन्तरद्वीपों के युगलिये मनुष्यों की जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग से कुछ न्यून, उत्कृष्टि पल्योपम के असंख्यातवें भाग प्रमाण।

तीर्थंकरों की स्थिति विषय

१	श्री ऋषभदेव भगवान की		८४ लक्ष पूर्व की
२	श्री अजितनाथ	,,	७२ ,,
३	श्री सम्भवनाथ	,,	६० ,,
४	,, अभिनन्दन	,,	५० ,,
५	,, सुमतिनाथ	,,	४० ,,
६	,, पद्मप्रभु	,,	३० ,,
७	,, सुपार्श्वनाथ	,,	२० ,,
८	,, चन्द्रप्रभु	,,	१० ,,

५	सुनन्द	,,	१७	,,
६	आनन्द	,,	८५ हजार	वर्ष की
७	नन्दन	,,	६५	,,
८	रामचन्द्र	,,	१५	,,
९	बलभद्र	,,	१२००	वर्ष की

प्रतिवासुदेवो की स्थिति विषय

१	अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव की		८५ लक्ष	वर्ष की
२	तारक	,,	७५	,,
३	मेरक	,,	६५	,,
४	मधुकेटक	,,	५५	,,
५	निसुम्भ	,,	१७	,,
६	बल	,,	८५ हजार	वर्ष की
७	प्रह्लाद	,,	६५	,,
८	रावण	,,	१५	,,
९	जरासध	,,	१२००	वर्ष की

२२ समोहिया द्वार

चारो गतियों के जीव दो प्रकार से मारणान्तिक समुद्घात से मृत्यु होते है। एक तो तन्तुवाय के ताने के समान, द्वितीय बन्दूक की गोली के समान। अर्थात् एक जीव के प्रदेश तन्तुवाय के ताने के समान आवागमनपूर्वक निकलते है। दूसरे बन्दूक की गोली के समान एक ही बार प्रदेश निकल जाते है।

२३ च्यवन द्वार

जिस प्रकार उत्पात द्वार का वर्णन किया गया है, उसी प्रकार च्यवन द्वार का भी स्वरूप जानना चाहिये।

२४ गतागति द्वार विषय

पहले नरक की २५ आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तिर्यञ्च। एव २५ [२० की गति कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च] दूसरे नरक की २० आगति–१५ कर्मभूमि के मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च २० की २० गति १५ कर्मभूमि के मनुष्य ५सज्ञी तिर्यञ्च। तीसरे नरक की २० आगति और गति १९ की है। किन्तु एक भुजपुर टल गया। चौथे नरक की १८ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। पाचवे नरक की १७ की आगति (स्थलचर टल गया) गति २० की। छठे नरक की १६ की आगति (उरपुर टल गया) गति वही २० की। सातवे नरक की १६ की आगति १५ कर्मभूमि के मनुष्य एक जलचर पुरुष–स्त्री नहीं जाति। गति ५ सज्ञी तिर्यञ्च की।

भवनपति वाणव्यन्तर की आगति १११ की ५६ अन्तर द्वीपों के युगलिये १५ कर्मभूमिये मनुष्य ३० अकर्मभूमिये मनुष्य, ५ सज्ञी तिर्यञ्च, ५ असज्ञी तिर्यञ्च एव सर्व १११।

गति २३ की, १५ कर्मभूमियें मनुष्य, ५ सज्ञी तिर्यञ्च, १ पृथ्वी २ पानी ३ वनस्पति एव २३। ज्योतिषी तथा

जैसे कि—आठवे देवलोक से ऊपर चार देवलोक और नव-ग्रैवेयक निमान पाच अनुत्तर विमान एव १८ अपर्याप्त और १८ पर्याप्त एव ३६ वोल टल गये। ५६३ में से शेष ५२७ रहे सो इन स्थानों मे काल करके जा सकता है। असज्ञी मनुष्य की आगति १७१ के थोकडे की। १७९ के थोकडे मे से ८ वोल टल गए।

जैसे कि—(१) तेजोकाय (२) वायुकाय (३) सूक्ष्म (४) बादर। चारों ही अपर्याप्त चारों ही पर्याप्त एन ८ टले बाकी १७१ रहे। असज्ञी मनुष्य की गति १७९ के थोकडे की। सज्ञी मनुष्य की आगति २७६ की ९९ प्रकार के देवता ६ नरक १७१ का थोकडा एव २७६ हुए।

गति ५६३ की। ५६ अन्तरद्वीपों के युगलियों की आगति २५ की, १५ कर्मभूमिये मनुष्य, ५ सज्ञी तिर्यञ्च ५ असज्ञी तिर्यञ्च एव २५ हुए।

गति १०२ की। १० भवनपति १५ परमाधर्मी १६ वाणव्यन्तर १० तिर्यञ्चजृम्भक एव। ५१ अपर्याप्त ५१ पर्याप्त। एव १०२ हुए।

पाच हैमवय—पाच हैरण्यवय के युगलियो की आगति २० की, १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च एव २०।

गति २१४ की—५१ पिछले १० ज्योतिषी १ पहला देव-लोक यह सर्व ६२ अपर्याप्त, ६२ पर्याप्त एव सर्व १२४ हुए।

पाच हरिवर्ष पाच रम्यक वर्ष के युगलियों की आगति पूर्वोक्त २० की। गति १२६ की। जैसे कि १२४ तो पिछले और एक दूसरे देवलोक का देवता अपर्य्याप्त और पर्य्याप्त एव १२६ हुए।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु के युगलियों की आगति पूर्वोक्त २० की। गति १२८ की—१२६ पिछले एक किल्विषिक, तीन पल्योपम वाले अपर्य्याप्त और पर्य्याप्त एव १२८ हुए।

तीर्थंकरदेव की आगति ३८ की, जैसे कि—२६ देवलोक ९, लौकान्तिक देव ३ नरक एव सर्व ३८ हुए।

गति एक मुक्ति की—केवली भगवान् की आगति १०८ की, ८१ प्रकार के देवता ९९ प्रकार के देवों में से १८ टल गए। जैसे कि—१५ परमाधर्मी तीन किल्विषिकदेव एव १८ शेप ८१ भेद हुए। १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च और पृथ्वी, पानी, वनस्पति तथा चार नरक एव १०८ हुए।

गति १ मुक्ति की—साधु की आगति २७५ की ९९ प्रकार के देवता ५ नरक, १७१ का थोकडा एव २७५ हुए।

गति ७० की—२६ देवलोक ९ लौकान्तिकदेव एव ३५ अपर्य्याप्त ३५ पर्य्याप्त एव ७१ हुए।

मूल गुण के विराधक साधु की आगति पूर्वोक्त २७५ की, गति १२६ की, जैसे कि—१० भवनपतिदेव १५ परमा-

धर्मी १६ वाणव्यन्तर १० तिर्यञ्चजृम्भक १० ज्योतिषी १ पहला देवलोक एक तीन पल्योपम वाला किल्विषिकदेव एव ६३ अपर्य्याप्त ६३ पर्य्याप्त एव १२६ हुए।

उत्तर गुण के विराधक साधु की आगति पूर्वोक्त १७५ की, गति १४८ की—१२६ पिछले ११ देवलोक अपर्य्याप्त और पर्य्याप्त एव २२ यह सर्व १४८ हुए।

श्रावक की २७६ की आगति ९९ प्रकार के देवता। ६ नरक १७१ का थोकडा एव सर्व २७६ हुए।

गति ४२ की—१२ देवलोक ९ लौकान्तिक एव २१ अपर्य्याप्त और २१ पर्य्याप्त सर्व ४२ भेद हुए।

चक्रवर्ती की आगति ८२ की—८१ प्रकार के देवता ९९ प्रकार के देवों मे से १८ टल गये। जैसे कि—१५ परमाधर्मी, ३ किल्विषिक, शेष रहे ८१ एक प्रथम नरक एव ८२।

गति नरक की, बलदेव की आगति ८३ की। ८१ प्रकार के देव पूर्वोक्त कथन किए हुए और २ नरक एव सर्व ८३।

गति देवलोक की वा मोक्ष की—वासुदेव की आगति ३२ की, १२ कल्प देवलोक नवग्रैवेयक विमान ९ लौकान्तिक देव २ नरक एव ३२ हुए।

गति नरक की—मण्डलीक राजा की आगति २७६ की पूर्वोक्त मनुष्य की आगति के अङ्क जानने चाहिये।

गति नरक की—सम्यग्दृष्टि की आगति ३६३ की ९९

प्रकार के देवता ७ नरक, ८३ प्रकार के युगलिये १७१ का थोकडा एव सर्व ३६३ हुए।

गति २५८ की—९९ प्रकार के देवता ६ नरक १५ कर्मभूमिये मनुष्य ५ सज्ञी तिर्यञ्च यह सर्व १२५ बोल हुए।

१२५ अपर्याप्त और १२५ पर्याप्त एव २५० हुए।

तीनों विकलेन्द्रियों का अपर्याप्त ५ असज्ञी तिर्यञ्च का अपर्याप्त एव ८ यह सर्व २५८ हुए।

मिथ्यादृष्टि की—आगति ३६६ की ९४ प्रकार के देवता ५ अनुत्तर विमानों के देवता टल गए। ७ नरक ८६ प्रकार के युगलिये।

५ हैमवय ५ हैरण्यय ५ हरिवर्ष ५ रम्यकवर्ष ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ५६ अन्तरद्वीपों के युगलिये एव ८६। १७९ का थोकडा एव सर्व ३६६ हुए।

गति ५५३ की—जीव के ५६३ भेदों में से ५ अनुत्तर विमान टल गए। ५ पर्याप्त, ५ अपर्याप्त एव १० टले। शेष ५५३ रहे। इतने स्थानों मे मिथ्यादृष्टि काल करके जाता है। प्रतिवासुदेव की आगति २७१ की, १७१ का थोकड जैसे कि—९४ प्रकार के देवता ६ नरक। गति अधोलोक की, पुरुषवेद की आगति ३७१ की, ९९ प्रकार के देवत ७ नरक, ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकड़ा। गति ५६३ की, स्त्री वेद की आगति ३७१ की ९९ प्रकार के

देवता ७ नरक, ८६ प्रकार के युगलिये १७९ का थोकडा गति ५६१ की, सातवीं नरक का पर्य्याप्त और अपर्य्याप्त टल गया। नपुमक वेद की आगति २८० की, १७९ का थोकडा ९४ प्रकार के देवता ७ नरक, गति ५६३ की।

२५ प्राण द्वार विषय

प्राण दस हैं—१ श्रुतेन्द्रिय बल प्राण, २ चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण, ३ घ्राणेन्द्रिय बल प्राण, ४ रसेन्द्रिय बल प्राण, ५ स्पर्श बल प्राण, ६ मनोयोग बल प्राण, ७ वचनयोग बल प्राण, ८ काययोग बल प्राण, ९ श्वासोच्छ्वास बल प्राण, १० आयुष्य बल प्राण। नारकियों और देवों में १० प्राण होते हैं। पाच स्थावरों में ४ प्राण होते हैं। जैसे कि—१स्पर्शेन्द्रिय, २ काययोग, ३ श्वासोश्वास, ४ आयु। द्वीन्द्रिय में ६ प्राण होते हैं। जैसे कि—१ स्पर्शेन्द्रिय, २ रसेन्द्रिय, ३ वचनयोग, ४ काययोग, ५ श्वासोश्वास, ६ आयुष्य। त्रीन्द्रिय जीवों में ७ प्राण होते हैं। ६ पूर्वोक्त ही हैं किन्तु एक घ्राणेन्द्रिय बढ गया है। चतुरिन्द्रिय जीवों में ८ प्राण होते हैं—७ पिछले, १ चक्षुरिन्द्रिय एव ८। असज्ञी तिर्यञ्च पचेन्द्रिय जीवों मे ९ प्राण होते हैं—८ पिछले १ श्रुतेन्द्रिय एव ९। असज्ञी मनुष्य में ८ प्राण होते हैं—५ इन्द्रियें, १ काय का योग, श्वासोश्वास और आयु एव ८। असज्ञी तिर्यञ्च और सज्ञी मनुष्यो में १० ही प्राण होते हैं।

२६ योग द्वार विषय

योग तीन हैं—१ मन, २ वचन, ३ काय। नारकीय और देवताओं में ३ योग होते हैं। परन्तु विशेष इतना ही है कि देवता के मन और वचन के योग एक ही समय उत्पन्न होते हैं।

५ स्थानरों में एक ही काय का योग होता है और तीनों विकलेन्द्रिय और असज्ञी तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय में २ योग [१ वचन २ काय] होते हैं।

असज्ञी मनुष्य में एक काय का ही योग होता है किन्तु सज्ञी तिर्यञ्च और सज्ञी मनुष्यों में तीनों योग ही होते हैं।

इति षट्विंशति द्वार समाप्त।

सातवें ,,	४०	हजार	विमान हैं
आठवें ,,	६	,,	,,
नववें ,,	२	सौ	,,
दशवें ,,	२	सौ	,,
ग्यारहवें बारहवे	३	,,	,,

नवग्रैवेयक में ३ त्रिक, पहली त्रिक मे १११ विमान।
दूसरी ,, १०७ ,,
तीसरी ,, १०० ,,

पाच अनुत्तर विमानों में ५ विमान । सर्व सख्या ८४९७०२३ विमान हुए।

५ पंक्तिबन्ध द्वार

पहले देवलोक मे	३८$\frac{3}{4}$ (पौने उनतालीस)	पक्ति बन्ध।
दूसरे ,,	३९$\frac{1}{4}$ (सवा ,,)	,,
तीसरे चौथे ,,	७१००	,,
पाचवे ,,	८३४	,,
छठे ,,	५८५	,,
सातवें ,,	३९६	,,
आठवें ,,	३३२	,,
नौवे दशवे ,,	२६८	,,
ग्यारहवें बारहवें ,,	२०४	,,

नवग्रैवेयक पहली त्रिक में १११ पक्तिबन्ध।
दूसरी ,, ७५ ,,

तीसरी	त्रिक मे	३९	,,
पाच अनुत्तर विमानों मे			५ पक्ति बन्ध ।

६ सख्यातासख्याता द्वार

सर्व विमानों को ५ भाग में बाटा गया है जिसमें ४ भाग तो असख्याते योजनों के विमान असख्याते देवता रहते हैं। एक भाग मे सख्याते योजनों के विमान सख्याते देवता रहते हैं।

७ राजु द्वार

सुमेरु गिरि के पास समभूमि से ७९० योजन ऊपर तारा मण्डल है। तारा मण्डल से १० योजन ऊपर सूर्य विमान है। सूर्य विमान से ८० योजन ऊपर चन्द्रमा का विमान है। चन्द्रमा के विमान से ४ योजन ऊपर २८ नक्षत्रों के विमान हैं। नक्षत्रों से ४ योजन ऊपर बुद्ध का विमान है। बुद्ध से ३ योजन ऊपर शुक्र का विमान है। शुक्र से ३ योजन ऊपर बृहस्पति का विमान है।

बृहस्पति से	,,	मगल	,,	,,
मगल से	,,	शनैश्चर	,,	,,

समभूमि से ऊपर	१½ (डेढ) राजु	पहला दूसरा देव लोक है।		
उस ,,	१ ,,	तीसरा चौथा	,,	,,
,, ,,	¾ (पौना)	पाचवा छठा	,,	,,
,, ,,	¼ (पाव)	सातवा आठवा	,,	,,
,, ,,	१ ,,	नववा, दसवा, ग्यारहवा, बारहवा		

उससे ऊपर १ राजु नव नवग्रैवेयक का विमान है।
,, ,, १ (कुछ कम) ५ अनुत्तर विमान हैं।

सर्वार्थ सिद्ध महा विमान से १२ योजन ऊपर मुक्ति-शिला पृथ्वी है [इसी प्रकार]

राजु का प्रमाण

राजु का प्रमाण—असत्य कल्पना से कोई देवता पहले दूसरे देवलोक से नीचे को १८११२९७० मन का एक ठोस लोहे का गोला बनाया जावे। उस गोले को ऊपर से छोड़ा जावे। तो छ मास छ दिन छ पहर छः घड़ी छ समय इतने काल में जितनी दूर जावे, उसको एक राजु का प्रमाण कहते हैं। अथवा असख्याते योजनों का एक राजु है।

नोट—ज्योतिषी चक्र ११० योजन मे है।

८ आधार द्वार

पहला दूसरा देवलोक	घनोदधि	के आधार का	है।
३, ४, ५ ,,	घनवाय	,,	,,
६, ७, ८ ,,	दोनो	,,	,,

९वें से २६वें तक जितने विमान है, सब मे हल्के भारे परमाणुओं की परस्पर की कशिश से आकाश पर ही खड़े हैं।

९ महलात द्वार

पहले दूसरे देवलोक मे	५००	योजन ऊंचे महल	हैं।
३, ४ ,,	६००	,,	,,
५, ६ ,,	७००	,,	,,

७, ८ ,,	८००	,,	,,
९, १०, ११, १२	९००	,,	,,

नव नवग्रैवेयक में १ हजार योजन ऊचा। ५ अनुत्तर विमानों में ११०० ग्यारह सौ ऊँचे महल हैं।

१० अगनाई द्वार

पहले दूसरे देवलोक में	२७००	योजन की अगनाई।	
३, ४ ,,	२६००	,,	,,
५, ६ ,,	२५००	,,	,,
७, ८ ,,	२४००	,,	,,
९, १०, ११, १२	२३००	,,	,,
नव नवग्रैवेयक ,,	२२००	,,	,,
५ अनुत्तर विमानों	२१००	,,	,,

११ वर्ण द्वार

पहले दूसरे देवलोक में पाचों वर्णों के विमान जवाहरात के होते हैं।

३, ४	,,	४	,,	[काला नहीं]
५, ६	,,	३	,,	[नीला नहीं]
७, ८	,,	२	,,	[लाल नहीं]

९ से लेकर स्वार्थ सिद्ध तक एक ही वर्ण श्वेत।

१२ चिह्न द्वार

मुकुटों के चिह्न।

पहले देवलोक के इन्द्र के	मुर्गे	का	चिह्न।	
दूसरे ,, ,, ,,	भैंसे	,,	,,	

तीसरे	,,	,,	सूअर ,,	,,
चौथे	,,	,,	वकरे ,,	,,
पाचवे	,,	,,	मेंढे ,,	,,
छठे देवलोक के इन्द्र के			हाथी का	चिह्न ।
सातवें	,,	,,	घोडे ,,	,,
आठवें	,,	,,	सर्प ,,	,,
नौवे, दशवे		,,	गेंडे ,,	,,
ग्यारहवे, बारहवें		,,	वृषभ ,,	,,

१३ सामानिक द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के		८४	हजार	सामानिक देवते।
दूसरे ,,	,,	८०	,,	,,
तीसरे ,,	,,	७२	,,	,,
चौथे ,,	,,	७०	,,	,,
पाचवें ,,	,,	६०	,,	,,
छठे ,,	,,	५०	,,	,,
सातवें ,,	,,	४०	,,	,,
आठवे ,,	,,	३०	,,	,,
नौवें दशवें	,,	२०	,,	,,
ग्यारहवे बारहवे ,,		१०	,,	,,

१४ आत्मरक्षक द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के		३३६०००	देवते	आत्मरक्षक हैं।
दूसरे ,,	,,	३२००००	,,	,,

तीसरे	,,	,,	२८८०००	,,	,,
चौथे	,,	,,	२८००००	,,	,,
पाचवे	,,	,,	२४००००	,,	,,
छठे	,,	,,	२०००००	,,	,,
सातवे	,,	,,	१६००००	,,	,,
आठवे	,,	,,	१२००००	,,	,,

नौवे दशवे देवलोक के इन्द्र के ८०००० आत्मरक्षक देवता
ग्यारहवें बारहवे ,, ४०००० ,, ,,

१५ लोकपाल द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ४ लोकपाल ।

दूसरे से लेकर आठवें तक चार चार ही लोकपाल हैं ।

९वे १०वे के ४ लोकपाल हैं

११वें बारहवे ,, ४ ,,

१६ तेतीस द्वार

एक एक इन्द्र के ३३–३३ देवता माता पिता तुल्य गुरु स्थान हैं । इन पर इन्द्र का हुक्म नहीं ।

१७ अनिका द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ७ अनिका ।

[हाथी, घोडे, रथ, पैदल, नाटक, गन्धर्व, वृषभ की एव सात २ अनिका]

पहले देवलोक के इन्द्र के १ करोड ६ लाख ६८ हजार ।

दूसरे देवलोक के इन्द्र के १ करोड १ लाख ६० हजार

तीसरे देवलोक के इन्द्र के ९१ लाख ४४ हजार

चौथे देवलोक के ८८ लाख ९ हजार

पाचवे देवलोक के ७६ लाख ३० हजार

छठे देवलोक के ६३ लाख ५० हजार

सातवें देवलोक के ५० लाख ८० हजार

आठवे देवलोक के ३८ लाख १ हजार

नौवें दसवें देवलोक के २५ लाख ४० हजार

११वे १२वें देवलोक के १२ लाख ७० हजार

१८ परिषद् द्वार

पहले देवलोक के इन्द्र के ३ परिषद्।

१२००० अन्दर की परिषद् के, १४००० मध्य की परिषद् के, १६००० बाहिर की परिषद् के।

दूसरे इन्द्रके	१० हजार की		१२ हजार की		१४ हजार की परिषद्		
तीसरे ,,	८	,,	१०	,,	१२	,,	
चौथे ,,	६	,,	८	,,	१०	,,	
पाचवे ,,	४	,,	६	,,	८	,,	
छठे ,,	२	,,	४	,,	६	,,	
सातवे ,,	१	,,	२	,,	४	,,	
आठवे ,,	५००	,,	१०००	,,	२०००	,,	
नववें, दसवे	२५०	,,	५००	,,	१०००	,,	

ग्यारहवे,बारहवे १२५ ,, २५० ,, ५०० ,,

१९ अग्रमहिषी द्वार

पहले इन्द्र की ८ अग्रमहिषियाँ ।

एक अग्रमहिषी का १६ हजार देवियों का परिवार है। सो कुल परिवार आठों का १२८००० है।

यह एक देवी वैक्रिय करे तो १६००० देवी हुई। इस प्रकार इन्द्र का सर्व परिवार २०४८००००००० देवियों का है।

दूसरे इन्द्र का भी ऐसे समझ लेना।

२० परिचारना द्वार

पहिले दूसरे देवलोक में मनुष्यवत् सहवास ।
तीसरे चौथे ,, ,, स्पर्श मात्र
पाचवे छठे ,, ,, रूप अवलोकन से तृप्ति।
७वें, ८वे ,, ,, वचन मात्र ,,
९वें,१०वे,११वे,१२वें,, मन ,,

२१ विमाननाम द्वार

पहिले देवलोक में पालक नामक विमान ।
दूसरे ,, पुष्पक ,,
तीसरे ,, सोमानस ,,
चौथे ,, नन्दीवर्धन ,,
पाचवे ,, काम ,,

छठे	,,	गाम	,,
सातवें	,,	विहङ्ग	,,
आठवें, ९, १० वें		सुविमल	,,
११ व, १२ वें ,,		सर्वतोभद्र	,,

२२ जावन आवन अर्थात् जाने आने का द्वार

पहिली नरक तक चारों प्रकार के देवता जा सकते हैं।
दूसरी ,, ३ ,, (ज्योतिषी टले)
तीसरी ,, २ ,, (वाणव्यन्तर टले)
चौथी से सातवीं तक केवल वैमानिक देवता जा सकते हैं।

२३ ज्ञान द्वार

१६ वाणव्यन्तर, ९ नवनिकाय, ज्योतिषी यह ऊपर को २५ योजन और नीचे २५ योजन तक देख सकते हैं और तिर्च्छा सख्याते द्वीप समुद्र देख सकते हैं। भवनपतियों के चमरेन्द्र, बलेन्द्र ऊपर को पहले दूसरे देवलोक तक देखते हैं। नीचे पहले नरक का चरमान्त तिर्च्छा असख्याते द्वीप समुद्र देख सकता है। पहले दूसरे देवलोक वाले देवते ऊपर अपने विमान की ध्वजा पताका तक। नीचे पहली नरक चरमान्त तक, तिर्च्छा असख्याते द्वीप समुद्र तक देख सकते हैं। तीसरे चौथे देवलोक के देवते ऊपर ध्वजा पताका तक, नीचे दूसरी नरक का चरमान्त, तिर्च्छा असख्याते द्वीप समुद्र तक देख सकते हैं।

५वें ६ठे वाला ऊपर अपनी ध्वजा पताका तक नीचे तीसरी
नरक का चरमान्त तिर्च्छे असख्याते द्वीप समुद्र तक।
७वें ८वें ,, ,, , ,, चौथी
नरक का चरमान्त तिर्च्छे असख्याते द्वीप समुद्र तक
९वें, १०वें, ११वें, १२वें ,, ,, ,, पाचवीं

नव ग्रैवेयक वेग मे पहले दूसरे त्रिक वाले ऊपर ध्वजापताका तक नीचे छठी नरक का चरमान्त तिर्च्छे असख्यात द्वीप समुद्र तक।

नव नवग्रैवेयक में तीसरी त्रिकवाले ऊपर ध्वजापताका तक नीचे सातवीं नरक का चरमान्त तिर्च्छे असख्याते द्वीप समुद्र तक।

पाच अनुत्तर विमानों के देवते कुछ न्यून सम्पूर्ण लोक देख सकते हैं।

२४ शक्ति द्वार

वाणव्यन्तर, नवनिकाय, ज्योतिषी, इनकी शक्ति वैक्रिय करने की थोडी।

चमरेन्द्र की शक्ति एक जम्बूद्वीप भर देने की।
बलेन्द्र ,, ,, साधिक एक जम्बूद्वीप ,,
पहले देवलोक के इन्द्र की २ जम्बूद्वीप भर देने की शक्ति।
दूसरे ,, ,, २ ,, [कुछ अधिक] ,,
तीसरे ,, ,, ४ ,, ,,

चौथे	,,	,,	४ ,,	[कुछ अधिक]	,,
पाचवे	,,	,,	८ ,,		,,
छठे	,,	,,	८ ,,	[कुछ अधिक]	,,
सातवे	,,	,,	१६ ,,		,,
८वे	,,	,,	१६ ,,	[कुछ अधिक]	,,
९वें १०वें		,,	३२ ,,		,,
११वे १२वे		,,	३२ ,,	[कुछ अधिक]	,,

वैक्रिय की शक्ति से भर देने की इतनी शक्ति होती है।

२५ पुण्य द्वार

वाणव्यन्तर १०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं। ज्योतिषी २०० वर्ष पीछे उतना भोगते है। इनका इन्द्र ३०० वर्ष पीछे उतना पुण्य भोगता है।

भवनपति ४०० वर्ष में इतना पुण्य भोगते हैं। उनके इन्द्र ५०० वर्ष में जितना पुण्य भोगते हैं।

पहले, दूसरे देवलोक वाले	१००० वर्ष	,,	,,	,,
तीसरे, चौथे ,,	२०००	,,	,,	,,
पाचवे, छठे ,,	३०००	,,	,,	,,
७वे, ८वे ,,	४०००	,,	,,	,,
९वें, १०वें, ११वे, १२वें,	५०००	,,	,,	,,
नवग्रैवेयकमे पहली त्रिकवाले	१०००००	,,	,,	,,
,, दूसरी	२०००००	,,	,,	,,

,, तीसरी	३०००००	,,	,,	,,
४ अनुत्तर विमानो वाले	४०००००	,,	,,	,,
सर्वार्थसिद्ध वाले	५०००००	,,	,,	,,

२६ परिगृहीत अपरिगृहीत द्वार

पहले देवलोक वाले देवता जघन्य एक पल की आयुवाली देवी भोगते हैं।

	उत्कृष्ट	७ पल	की	देवी
दूसरे ,, ,,		एक पलसे अधिक		,,
	उत्कृष्ट	९ पल	की	देवी
तीसरे ,, ,,		७	,,	,,
	उत्कृष्ट	१० पल	की	देवी
चौथे ,, ,,		१०	,,	,,
	उत्कृष्ट	१५ पल	की	देवी
पाचवें ,, ,,		१५	,,	,,
	उत्कृष्ट	२० पल	की	देवी
छठे * ,, ,,		२०	,,	,,
	उत्कृष्ट	२५ पल	की देवी	,,

सातवें वाले	जघन्य	२५ पल की।	उत्कृष्ट	३० पल की।	
आठवें	,,	३०	,,	३५	,,
नौवे	,,	३५	,,	४०	,,
दशवें	,,	४०	,,	४५	,,

ग्यारहवें	,,	४५	,,	५०	,,
बारहवें	,,	५०	,,	५५	,,

इति देवलोक द्वार समाप्त ।

अधोलोक का वर्णन

पहली पृथ्वी का १८०००० योजन मोटा दल है। जिसमें १ हजार नीचे और एक हजार ऊपर छोड दें तो मध्य १७८००० योजन की पोलाड़ में १३ पाथडे हैं। और तीस लाख नरक के वास हैं जिनमें तीन तीन हजार योजन का अन्तर है। एक हजार ऊपर एक हजार योजन नीचे छोड़कर मध्य एक हजार योजन की पोलाड़ में नरक के वास हैं।

नोट—मेरु पर्वत के पास सम भूमि में नीचे जो पृथ्वी दल में से एक हजार योजन ऊपर छोडा है उसमें और पहली नरक से ऊपर पोलाड़ है। उस पोलाड में ८ प्रकार के व्यंतर और ८ प्रकार के वाणव्यंतर, १६ प्रकार के *देवता रहते हैं। तिर्च्छे लोक में उनका आना जाना बहुत होता है और शासते वासधर पर्वतों पर उनके रमणीय स्थान भी हैं।

नोट—१३ पाथडों के १२ अन्तर, ऊपर नीचे का एक एक अन्तर छोडकर मध्य १० अन्तरों में १० जाति के भवनपति देवता रहते हैं। जिनको "यम" भी कहते हैं।

दूसरी पृथ्वी का १३२००० योजन मोटा दल है। उसमें एक हजार नीचे एक हजार ऊपर छोडकर मध्य १३०००० योजन की पोलाड मे ११ पाथडे (मजलें) और २५ लाख नरक के वास हैं।

तीसरी पृथ्वी का १२८००० योजन मोटा दल है। जिसमे एक हजार योजन नीचे, एक हजार ऊपर छोडकर मध्य १२६००० योजन की पोलाड मे ९ पाथडे और १५ लाख नरक के वास हैं।

चौथी पृथ्वी का १२०००० योजन मोटा दल है। एक हजार योजन नीचे, एक हजार ऊपर छोडकर मध्य ११८००० योजन की पोलाड मे ७ पाथडे और १० लाख नरक के वास हैं।

पाचवीं पृथ्वी का ११८००० योजन मोटा दल है। एक हजार ऊपर एक हजार नीचे छोडकर मध्य ११६००० योजन की पोलाड मे ५ पाथडे और ३ लाख नरक के वास हैं।

एक पाथडा तीन २ हजार योजन का मोटा है।

नोट—पहली पृथ्वी के ३ भाग हैं।

१ खर (कठिन) भाग। १६००० योजन मोटा।

२ पङ्क भाग। ८४००० ,, ,,

३ अपबहुल (जलबहुल) भाग। ८०००० ,,

एव सर्व १८०००० योजन हुए।

छठी पृथ्वी का ११६००० योजन मोटा दल है। जिसमे एक हजार नीचे एक हजार ऊपर छोडकर मध्य ११४००० योजन की पोलाड मे ३ पाथडे और ५ कम एक लाख नरक के वास हैं।

सातवीं पृथ्वी का १०८००० योजन मोटा दल है। जिसमे ५२½ हजार नीचे, ५२½ हजार योजन ऊपर छोडकर मध्यमें ३००० योजन का एक पाथडा है। जिसमें ५ नरक के वास हैं।

अलोक

पहली नरक से १२ योजन की दूरी पर अलोक है। [तिन्छों]
दूसरी नरक से १२ योजन २ भाग की दूरी पर अलोक है।

तीसरी	,, १३	,,	१		,,	,,	,,
चौथी	,, १४	,,			,,	,,	,,
पाचवीं	,, १४	,,	२ भाग		,,	,,	,,
छठी	,, १५	,,	१	,,	,,	,,	,,
सातवीं	,, १६	,,	,,		,,	,,	,,

आधार

प्रत्येक पृथ्वी के नीचे २० हजार योजन मोटी घनोदधि है। उसके नीचे असख्यात योजन की भारी हवा और उसके नीचे असख्यात योजन की हल्की हवा है। इनकी कशिश पर पृथ्वी टिकी (ठहरी) हुई है।

पाथड़ों का अन्तर

पहली नरक के १३ पाथड़े और १२ अन्तर। एक २ अन्तर ११५८३ योजन एक भाग का है।

दूसरी के ११ पाथड़े १० अन्तर। एक एक का ९,७०० योजन का अन्तर।

तीसरी ,, ९ ,, ८ ,, ,, ,, ,, १२३७५ ,, ,, ,, ।

चौथी ,, ७ ,, ६ ,, ,, ,, ,, १६१६६ ,, ,, ,, ।

पाचवीं ,, ५ ,, ४ ,, ,, ,, ,, २५२५० ,, ,, ,, ।

छठी ,, ३ ,, २ ,, ,, ,, ,, ५२५०० ,, ,, ,, ।

सातवीं ,, १ ,, अन्तर नहीं।

श्रेणी बन्ध

पहली नरक में २९९५५६७ पुष्पावकर्ण वास।
और ४४३३ पंक्ति बन्ध।

दूसरी ,, ,, २४९७३०५ ,, ,,
और २६९५ पंक्ति बन्ध।

तीसरी ,, ,, १४९८५१५ ,, ,,
और १४८५ पंक्ति बन्ध।

चौथी ,, ,, ९९९२९३ ,, ,,
और ७०७ पंक्ति बन्ध।

पाचवीं ,, ,, २९९७३५ ,, ,,
और २६५ पंक्ति बन्ध।

छठी ,, ,, ९९९३२ ,, ,,
और ६३ पंक्ति बन्ध।
सातवीं ,, ५ ,, ,,

अवधि ज्ञान

पहली नरक के नारकीय जघन्य ३½ कोस उत्कृष्ट ४ कोस देख सकते हैं।
दूसरी ,, ,, ३ उत्कृष्ट ३½ कोस
तीसरी ,, ,, २½ ,, ३ कोस
चौथी ,, ,, २ ,, २½
पांचवीं ,, ,, १½ ,, २ कोस देख सकते हैं।
छठी ,, ,, १ ,, १½ कोस
सातवीं ,, ,, ½ ,, १ कोस

जैन धर्म के मुख्य नियम

१ लोक अनादि, अनन्त, अकृत्रिम है। चेतन अचेतन आदि इन छ द्रव्यों से भरा हुआ है।

जीव द्रव्य अनन्तानन्त भिन्न है (१) अजीव द्रव्य रूपी तथा अरूपी रूपी द्रव्य अनन्त (२) बाकी चार अरूपी—धर्मास्ति-काय (३) अधर्मास्ति (४) आकाशास्ति (५) काल द्रव्य (६) एवं (७) क्रम से चलन, स्थिर, अवकाश और परिवर्तन स्वभाव है। इन गुणों से युक्त है। विशेष विवरण नवतत्त्व में देखें।

२. परमात्मा सच्चिदानन्द, अनन्तज्ञानी, अरूपी, जिसका ज्ञान सर्वव्यापक है, अयोनि, अजर, अमर, निराकार, निष्कलङ्क, निरिच्छ, निष्प्रयोजन, निष्कर्म, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, अनन्त शक्तिमान्, शिव, अचल, अरुज, अनन्त, अक्षय, अव्यय, सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, इत्यादि गुणों के धारक परमात्मपद को अनादि मानते हैं।

३. ससारी जीव—पाप पुण्यमय प्रवाह रूप कर्मों से शरीर से सयोग पाए हुए अनादि से भिन्न २ शरीर, कर्मों के धारक अशुद्ध और अनन्त हैं। चार गतियों में विभक्त हैं। हर एक ससारी जीव स्वतन्त्रता से अपने अशुद्ध योगों द्वारा कर्म बाधते हैं। फिर कर्मों के वश नीच गतियों मे

हो। वर्तमान समय में ३२ शास्त्रों को प्रामाणिक माना जाता है। सो चार भागों में विभक्त है।

१. **प्रथमानुयोग**—जिसमें भरत क्षेत्र के ६३ महापुरुष जिसमें ऋषभदेव, महावीर, चक्रवर्त्ति, और रामचन्द्र, रावण, कृष्ण, जरासन्ध आदि के चरित्र का वर्णन है।

२. **करणानुयोग**—इसमें तीनों लोक (अधो, मध्य, ऊर्ध्व) का नकशा है। जम्बूद्वीप, प्रज्ञप्ति आदि शास्त्रों में वर्णन है।

नोट—इसलिए जैन धर्म्म को महान ऋषि, चक्रवर्त्ती, सेठ, रङ्क, दरिद्री सब ही पाल सकते हैं। विशेष १४ गुण-स्थानों से पता लगता है।

३. **चरणानुयोग**—जिसमें त्यागी और गृहस्थों के चारित्र पालने की विधि है। आचाराङ्ग, उपासक दशाङ्ग आदि शास्त्रों में वर्णन है।

४. **द्रव्यानुयोग**—इसमें तत्त्व ज्ञान, अध्यात्म, कथन, लोक का ढाचा, जीव और प्रकृति का वर्णन, नव तत्त्व पदार्थ अनेक शङ्का समाधान कर्म सिद्धान्त आदि का वर्णन है। गणित, ज्योतिष–भगवती, अनुयोग द्वार आदि शास्त्रों में वर्णन है।

८. **धर्म यात्रा**—द्रव्य, क्षेत्र, कालानुसार मिथ्यात्व में फसे हुए प्राणियों को इस ससार में सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र का बोध कराने के लिए सदुपदेश देना। जीवाजीव पुण्य, पाप, आश्रव, बन्ध, मोक्ष, नव तत्त्व का बोध कराना,

कुगुरु, कुदेव, कुधर्म, कुशास्त्र, कुरूढि आदि से हटा कर सुगुरु, सुदेव, सुधर्म, सुशास्त्र, सम्यक्त्व, तप, नियम, सयम, स्वाध्याय, शुभध्यान, सत्य, सतोष आदि शुभ गुणों मे प्रवृत्ति कराना। प्राणिमात्र से मैत्री भाव, गुण ग्रहण, करुणा, मध्यस्थ भाव, अन्याय को तोडना, न्याय, मे प्रवृत्त होना, आदि गुणों मे लगाना। और साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाए, चार तीर्थ रूपी सङ्घ का परस्पर मेल करा कर धर्म प्रीति और प्रेम मे वृद्धि कराना। कुमङ्गल त्यागना सुमङ्गल में प्रवृत्त होना, सर्वज्ञ प्रणीत सिद्धान्त को प्राणिमात्र के कानों तक पहुचाना। दान, शील, तप, भावना आदि मे प्रवृत्त होने को धर्म यात्रा कहते है, जिसमे सात कुव्यसनों का त्यागना भी है।

९ परोपकार

स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो सहते हैं।
ऐसे परोपकारी जग के दुःख समूह को दहते हैं॥

अपने स्वार्थ को त्याग कर दुखियों के हित साधन मे लग जाने का नाम परोपकार है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावानुसार अनाथों की रक्षा, निराश्रितों को आश्रय देना, धर्म से गिरते हुओं को स्थिर करना, ज्ञानदान देना, बीमार, अपाहज, अतिथि इत्यादिको के लिए भोजन ओषधि आदि का प्रबन्ध करना। इत्यादि मनुष्य समूह मे कृपा का पात्र हो। उसकी तन, मन, धन से सेवा करना। जिन पशुओं से मनुष्य वर्ग

का विशेष हित होता है ऐसों की रक्षा में विशेष ध्यान रक्खा जावे । और साथ ही दु खी, अपाहज, रुग्ण, आदि पशुओं के लिए तन, मन, धन से रक्षा का प्रबन्ध करना । और जो देवी, देवतों की यज्ञों या अज्ञानता से राजगद्दी की रक्षा के लिए हिंसा करते हों, उनको प्रयत्न से हटाना स्वय कष्ट उठाकर दूसरों के लिए हित करना परोपकार कहलाता है ।

१० मोक्ष—सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र यह मोक्ष मार्ग हैं । अनादि काल से प्रवाह रूप कर्मों से अशुद्ध आत्मा को शुद्ध करने के लिए सर्वज्ञ द्वारा प्रणीत शास्त्रों का सम्यग् ज्ञान और सच्ची श्रद्धा और सम्यक् चारित्र की आवश्यकता है । क्योंकि ज्ञान से आत्मा तथा कर्मों का सम्बन्ध जाना जाता है । दर्शन से दृढ विश्वास किया जाता है । चारित्र से आते हुए कर्मों को रोका जाता है । और चौथा तप जिससे पूर्वसञ्चित कर्मों का क्षय किया जाता है । ऐसे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप द्वारा आत्मा के निर्मल होते ही अर्थात् आठ कर्मों के क्षय होते ही महाज्ञान (केवलज्ञान) प्रकट होता है ।

१. ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से अनन्त अक्षय ज्ञान गुण ।
२ दर्शनावरणीय ,, ,, ,, ,, दर्शन गुण ।
३ अन्तराय ,, ,, ,, ,, आत्मिक शक्ति ।
४ मोहनीय ,, ,, ,, क्षायिक सम्यक्त्व ।

५ नाम „ अमूर्त रूप-रस, गन्धस्पर्शरहितत्व निरञ्जन निराकारपना ।
६ गोत्र „ अगुरु लघुत्व अथवा नीचता रहितत्व हल्के भारीपने का अभाव ।
७ वेदनीय „ „ अखण्डनिराबाध सुख ।
८ आयुष्य „ „ „ अचल स्थिति ।

इन आठ गुणो के प्राप्त होते ही कर्म लेप से रहित निर्मल आत्मा अक्षय, अनन्त मोक्ष में जाकर सच्चिदानन्द स्वरूप होकर जोत में जोत समा कर अनन्त सुख मे लीन हो जाती है । फिर जन्म, मरण रूपी बन्धनों मे कभी नहीं आती ।

श्लोक—दग्धे बीजे यथात्यन्त प्रादुर्भवति नाकुरः ।
कर्मबीजे तथा दग्धे न रोहति भवाकुरः ॥

गुणस्थान

सम्पूर्ण लोक के शरीरधारी सर्व (अनन्त) जीव १४ जगह विभक्त है । अर्थात् आत्मा के गुणों का जिस २ जगह स्थान हो, उन्हे गुणस्थान कहते हैं ।

१ मिथ्यात्व गुणस्थान—अधर्म को धर्म समझना । धर्म को अधर्म समझना । मिथ्याविचार वाला ८४ लाख योनि मे अनन्त काल परिभ्रमण करता रहता है ।

२. सास्वादन गुणस्थान—बहुत स्वल्प समय के लिये मिथ्या को मिथ्या सम को सम समझ कर फिर मिथ्या ख्याल हो जाए । वह आत्मा अर्ध पुद्गल समय तक ससार

१२ क्षीणमोह गु०—२८ क्षय करे तब ११ वा गुणस्थान उलंघ कर १२वे क्षीणमोहनीय गुणस्थान में आवे। पिछले समय मे बाकी तीन घन घातिये कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय, क्षय करके १३वे सजोगी केवली गुणस्थान में आता है। यहा १० बोल की प्राप्ति होती है।

१ अनन्तदानलब्धि २ लाभ ल० ३ भोग ल० ४ उपभोग ल० ५ वीर्य ल० ६ केवलज्ञान ल० ७ केवलदर्शन ल० ८ क्षपक सम्यक्त्व ९ शुक्ल ध्यान तीसरा १० यथाक्षायिक चारित्र।

१४ अयोगी केवली गु०—मन, वचन, काया के योगों को रुन्धन करके ४ अघातिये कर्म (वेदनीय, नाम, गोत्र) को क्षय करके पाच लघु अक्षर उच्चारण जितने समय मे औदारिक तेजस, कार्मण, शरीर को छोडकर एक समय में मोक्ष पद को प्राप्त हो जाते हैं। सच्चिदानन्द स्वरूप होकर अनन्त सुखों में सदा के लिए लीन हो जाते हैं। फिर वह सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं।

गुणस्थान स्थिति

पहले गुणस्थान की स्थिति—अनादि अनन्त, (अभव्य) अनादि सान्त, (भव्य) सादि सान्त (पडिवाई) पडिवाई आश्रय मिथ्यात्व की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टि देश उणी न्यून अर्द्ध पुद्गल की।

२ गु० की स्थिति—जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ आवलिका ७ समय की।

३ गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

४ गु० की स्थिति—जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट साधिक ६६ सागर की। तीन भव १२ देवलोक के २२—२२ सागर के अथवा ३३—३३ सागर के २ भव अनुत्तर विमानों के। मनुष्य भव में अधिक।

५ गु० की स्थिति—५, ६, १३ गुणस्थान की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देशन्यून पूर्व क्रोड की।

७ वें से ११वें गुणस्थान तक की स्थिति—जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

१२ वें गु० की स्थिति—जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की।

१४ गु० की स्थिति—५ लघु अक्षर उच्चारण काल की।

क्रिया

१, ३ गु० में २४ क्रिया इरियावहि नहीं।
२, ४ ,, ,, २३ ,, इरिया मिथ्या नहीं।
५ ,, ,, २२ ,, ,, अवृत्ति नहीं।
६ ,, ,, २ आरम्भिया मायावत्तिया।
७ से १० तक १ क्रिया मायावत्तिया।
११, १२, १३ में १ क्रिया इरियावहि।
१४ वें गुणस्थान में क्रिया नहीं।

सत्ता

पहले से लेकर ११वें गु० पर्यन्त ८ कर्म की सत्ता।
१२वें गु० में ७ कर्म की सत्ता। मोहनीय नहीं।
१३वें १४ ,, ४ ,, ,, । वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र।

बन्ध

१, २, ४, ५, ६, ७ गु० में आठों कर्मों का बन्ध।
यदि सात कर्म बान्धे तो आयु कर्म टले।
३, ८, ९ गु० में ७ कर्मों का बन्ध। आयु नहीं।
१० ,, ,, ६ ,, ,, । आयु, मोहनीय नहीं।
११, १२, १३ ,, सातावेदनीय का बन्ध।
१४ गु० में कर्मों का बन्ध नहीं।

इति गुणस्थान समाप्त।
